R.N.I. No. 2321/57

मार्च 2016

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 04/2016-18

अंक 2

तपोभूमि

मासिक

श्रद्धेय आचार्य बल्देव जी महाराज के साथ डी.ए.वी. हायर सेकेण्ड्री स्कूल के प्रबन्धक श्री रमेशचन्द्र जी आर्य, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री ब्रजेश जी, माननीय श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र जी आर्य व अन्य।

सम्पादकीय

घिनौनी स्वार्थपरता राष्ट्रिय अखण्डता के लिए बड़ा संकट

विगत 9 फरवरी को जे. एन. यू. जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान में जो कुछ भी घटित हुआ राष्ट्र के विखण्डन के नारे लगे। अफजल के समर्थन में नारे लगे। यह कोई अनायास हुई सामान्य घटना नहीं है। न केवल कुछ छात्रों ने भावुकता में आकर नारे लगाये हैं। बल्कि यह एक सोचा समझा षड्यन्त्र है। जो योजनाबद्ध तरीके से भारत को पुनः विखण्डित करने के लिए चलाया जा रहा है। भारतीय जन-मानस को इस षड्यन्त्र के विरुद्ध सजग करने के लिए राष्ट्रवादियों शक्तियों को एक सघन जन-जागरण अभियान चलाने की महत्ती आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति की उदारता का आवरण ओढ़कर कुछ नासमझ लोग वही गलती कर रहे हैं जो भारत के विभाजन के समय महात्मा गाँधी जैसे लोगों ने मानवता की दुहाई देकर की थी। गाँधी जैसे लोग अपने भारतीय संस्कृति में पले उदारवादी समाज को यही समझाते रहे कि-

रघुपति राघव राजा राम,
ईश्वर अल्ला तेरे नाम,
सबको सनमति दे भगवान्।

राम वाले सन्त बनकर मानवता का जप करते रहे और अल्लाह वाले देश के टुकड़े-टुकड़े करके ले गये। शेष अपने भाईयों को गाँधी जैसे लोगों की उदारता की छत्रछाया में फलने-फूलने के लिए छोड़ गये। वे आज फिर विषैले विष वृक्ष बनकर भारत विरोधी नारे लगाकर अपनी कुत्सित मानसिकता को प्रकट कर‌ते रहे हैं। हम भारतीयों को यह तथ्य गहराई से समझना होगा। जिन मतों सम्प्रदायों की जड़ भारत की भूमि में उत्पन्न नहीं हुई है वे कभी भी देश हित की बात सोच नहीं सकते। चाहे वे ईसाई हों, मुसलमान हों या कम्यूनिस्ट विचार-धारा के लोग।

राष्ट्र की पहचान, भाव, भाषा भूमि होती है। भाव यदि पवित्र नहीं हुए तो भाषा और भूमि कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकती है। भारत की कम्यूनिस्ट पार्टियों के कार्यकर्त्ताओं को विदेशी चिन्तन घुट्टी में यह पिला दिया जाता है कि भारतीय संस्कृति के मूल तत्व ही हमारा विनाश कर रहे हैं। वे भारतीय उदात्त भावनाओं से सर्वथा अपरिचित रहते हैं इसलिए आप्त विचारों को संकीर्णता के कीचड़ में लपेटा जाता है। उन्हें भारत के पवित्र त्याग में मूर्खता दिखाई देती है। सती सीता, सावित्री, अपाला, घोषा, पद्मिनी जैसी पवित्र नारियों परतंत्रता में जकड़ी मानसिक विकृति की मूर्त्ति लगती हैं। ऋषि, महर्षियों का त्यागमय जीवन उन्हें पाखण्ड दिखाई पड़ता है। समाज को चलाने के लिए वर्ण-व्यवस्था उन्हें एक बड़े वर्ण को परतन्त्र करने का षडयंत्र लगता है। संस्कृत जैसी महान् भाषा को ब्राह्मणों द्वारा चालाकी से चलाई गई लूटने खसोटने की भाषा लगती है॥ माओ और लेनिन मार्क्स के ये मानसपुत्र भारतीय उज्जवल परम्पराओं को ध्वस्त करने में अपना गौरव समझते हैं। इनके लिए देश कोई चीज नहीं है। इसीलिए प्रायः करके हम देखते हैं भारत की संस्कृति और भाषा की कहीं भी बात आती है वामपंथीदल सबसे पहले इसके विरोध में खड़े होकर इसे संकुचित मानसिकता का नाम देकर अपनी क्षुद्रता को महत्ता बताने में लग जाते हैं और मैकाले के मानसपुत्र कांग्रेसी ऐसी बातों में उनका खुलकर साथ देते हैं। हद तो तब हो गयी जब हमारे कुछ मीडिया के लोग भी राष्ट्र विरोधी गतिविधिओं को रोकने के लिए किये कार्यों को असहिष्णुता कहकर रेखांकित करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि सामाजिकस्तर, बौद्धिकस्तर पर, राजनीतिकस्तर पर, धार्मिकस्तर पर जो कुछ भी हो रहा है अत्यन्त खतरनाक है। भविष्य में देश को भीषण संकट लाने वाला है।

-(शेष पृष्ठ सं. 35 पर)

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका
(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–62 संवत्सर 2072 मार्च 2016 अंक 2

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादक:
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

मार्च 2016

सृष्टि संवत्
1960853116

दयानन्दाब्द: 193

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा
(उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाष:
0565–2406431
मोबा. 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4
पुराणों को किसने बनाया	–डॉ0 श्रीराम आर्य	5–8
प्रकाश मार्ग दिखाओ	–टी.एल.वासवानी	9–12
इन्द्रियों को वश में रखना	–बाबू सूरजभान वकील	13–15
ब्रह्मचर्य–विज्ञान	–जगननारायण देव	16–19
देशभक्ति के प्रेरक कवित्त	–रोहित आर्य	20–23
ब्रह्मचर्य	–पण्डित सत्यव्रत	24–25
भोजन भट्टों की आत्माभिव्यक्ति	–लाखनसिंह भदौरिया	26
सांस्कृतिक अवहेलना से उत्पन्न देशद्रोह	–आचार्य आर्यनरेश	27–29
बलि प्रथा! एक घिनौना कृत्य	–रामेन्द्रकुमार आर्य	30–31
संस्कृत की महानता	–रामेन्द्रकुमार आर्य	32–33

❁❁❁

वार्षिक शुल्क 150/– पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

डॉ० रामनाथ वेदालंकार

राजा का अभिषेक

अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पयस्वतीः।
यथासो मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत्।। –अथर्व0 4.8.6

शब्दार्थ:–

हे नवनिर्वाचित राजन्! (पयस्वतीः दिव्याः आपः) रस भरे आकाशीय वर्षाजलों ने (त्वा) तुझे (वर्चसा असिचन्) वर्चस से सींचा है। (यथा) जैसे तू, (मित्रवर्धनः असः) मित्र राष्ट्रों को बढ़ाने वाला होवे (तथा) वैसा (त्वा) तुझे (सविता करत्) सविता प्रभु करें।

भावार्थ:–

वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद के दशम अध्याय में राजसूय यज्ञ प्रकरण में राजा के अभिषेकार्थ 17 प्रकार के जलों के ग्रहण किये जाने का वर्णन है, यथा नदी–जल, कल्लोल–जल, बहते–जल, विपरीत दिशा में बहनेवाले जल, मुख्य धारा से इधर–उधर होकर पुनः उसी में आ मिलनेवाले जल, समुद्र–जल, भँवरों के जल, सरोवर के जल, धूप निकलते में बरसनेवाले जल, कूप–जल, ओस के जल आदि। शतपथ ब्राह्मण में यह भी बताया गया है कि इन जलों से राजा को क्या प्रेरणाएँ मिलती हैं। यथा सरस्वती (नदी) के जलों से राजा को अभिषिक्त करने का तात्पर्य है उसे वाक्शक्ति से अभिषिक्त करना। बहते हुए जलों से अभिषेक इस हेतु से होता है कि बहते जल शक्तिशाली होते हैं, उनसे अभिषेक करना वीरता या शक्ति से अभिषेक करना है। समुद्र 'अपांपतिः' है, राजा भी प्रजापति होने के कारण 'अपांपतिः' होता है, अतः समुद्र–जल से अभिषेक करने का आशय है राजा में प्रजापतित्व का गुण लाना। ओस–जल से अभिषेक इस कारण करते हैं कि ओस अन्नोपत्ति का हेतु है, वैसे ही राजा राष्ट्र में भरपूर अन्न का उत्पादन करवाता रहे। मधु के अभिषेक से यह सूचित होता है कि राजा प्रजाओं के प्रति रसीला और मधुर रहे।

प्रस्तुत मंत्र में आकाशीय जलों (दिव्याः आपः) द्वारा राजा के अभिषेक की चर्चा की गयी है। आकाशीय जलों में जल, विद्युत् और वायुओं का अपूर्व संयोग होता है। घने जल से भरी काली–काली घनघटा छाती है, दीप्तिमयी दामिनी दमकती है, पवन मेघघटा को झकझोरते हैं, मानसून हवाएँ चलती हैं, कभी रिमझिम, कभी साधारण, कभी मूसलाधार हैं। हे नवनिर्वाचित राजन्! तुझे उन रसीले दिव्य वर्षाजलों ने सींचा है, राज–पुरोहित ने उनके द्वारा तेरा अभिषेक किया है। तू उनसे शिक्षा ले कि वर्षाजलों के समान हितकर, रसीला और मधुर होगा, बादल में गर्जने और चमकनेवाली विद्युतों के समान देदीप्यमान होगा और बादलों को बरसानेवाले गरम–शीतल पवनों के समान राष्ट्र को अभ्युदय के लिए

–(शेष पृष्ठ सं.15 पर)

गतांक से आगे–

पुराणों को किसने बनाया?

लेखक: डॉ0 श्रीराम आर्य

सभी पुराण बनाने वालों की निन्दा

प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे च काले:।
नत्वां भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते।।
धूर्तैः पुराण चतुरैः हरि शंकराणाम्।
सेवा पराश्च विहिता स्तव निर्मितानाम्।। 12।।

–(देवी भागवत पुराण, स्कन्द 5, अध्याय 19)

अर्थ– हाय! हाय! ऐसे कराल कलिकाल के आ जाने पर भी वैष्णव-शैव-गाणपत्य-सौर सम्प्रदायानुरागी होकर आपकी पूजा नहीं करते।

इससे स्पष्ट है कि धूर्त पुराण रचयिताओं ने आपके बनाये विष्णु, शंकर आदि देवताओं की आराधना में लगाकर उनको बड़ा धोखा दिया है।

इस श्लोक में 'धूर्त:' पद बहुवचन में आया है। इससे प्रकट है कि पुराण बनाने वाले अनेक लोग हुए हैं। पुराणकार ने उन सभी को धूर्त बताकर उनकी घोर निन्दा की है।

नरक में ले जाने वाले पुराणों की सूची

पुराणानि च वक्ष्यामि तामसानि यथा क्रमात्।। 13।।
मात्स्य कौर्म तथा लैंग शैवं स्कान्दं तथैव च।। 17।।
आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निवोध मे।। 18।।
तथैव तामसा देवि निरय प्राप्ति हेतवः।। 21।।
तामसा नरकायैव वर्जयेत्तानि विलक्षणाः।। 26।।

–(पदम पुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय 236 कलकत्ता)

अर्थ– मैं तामस पुराणों को यथाक्रम कहता हूँ। मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द, अग्नि इन पुराणों को तामस पुराण जानो।

हे देवि! यह तामस पुराण पाठकों को नरक में धकेलने के लिए हैं। इसलिए बुद्धिमानों को चाहिए कि वे तमाम पुराणों का बहिष्कार कर देवें।

पद्मपुराण ने जहां उपरोक्त छः पुराणों को तामस व त्याज्य बताया है वहां भविष्य पुराण

प्रतिसर्ग पर्व खण्ड 3, अध्याय 28 में लिखा है कि–

मार्कण्डेय, वाराह, अग्नि, लिंग, ब्रह्माण्ड तथा भविष्य यह छः तामस पुराण हैं–

इसका अर्थ यह हुआ कि कुल 18 पुराणों में से मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कन्द, अग्नि, मार्कण्डेय, वाराह, ब्रह्माण्ड तथा भविष्य यह 10 पुराण तो तामस पुराण हैं और पदम् पुराण की व्यवस्था के अनुसार तामस पुराण होने से ये सभी नरक में ले जाने वाले हैं।

अतः इनका तो पूर्णरूपेण बहिष्कार कर देना चाहिए। यह तो हाथ से छूने के योग्य भी नहीं हैं। शेष रहे छः पुराण उनमें भी कुछ राजस हैं और तामस शास्त्र हैं। इस प्रकार पुराणों में पुराणों की ही घोर निन्दा की हुई है।

पुराणों में ब्राह्मणों की निन्दा

पूर्वये राक्षसा साजंस्ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः।। 42।।
पाखण्ड निरताः प्रायो भवन्ति जन वचकाः।
असत्यवादिनः सर्वे वेदधर्म विवर्जिताः।। 43।।
दाम्भिका लोक चतुरा मानिनोवेदवर्जिताः।
शूद्रसेवापराः केचित् नानाधर्म प्रवर्तकाः।। 44।।
वेद निन्दाकराः क्रूरा धर्मभ्रष्टाति वादुकाः।। 45।।
शूद्रधर्मरता विप्राः प्रतिग्रह परायणाः।। 47।।

–(देवी भागवत पुराण 6–11)

अर्थ– हे राजन्! पूर्वकाल में जो राक्षस थे, वे ही कलियुग में ब्राह्मण पैदा हुए हैं। वे लोग पाखण्डों में तल्लीन रहते हैं और प्रायः लोगों को ठगने वाले होते हैं।

वे सभी झूठ बोलने वाले वेद और धर्म से रहित, दम्भी, लोक व्यवहार में चतुर, बड़े अभिमानी एवं शूद्रों की सेवा करने वाले, तरह–तरह के मत–मतान्तर चलाने वाले, वेदों की निन्दा करने वाले, बड़े क्रूर, धर्म में लगे रहने वाले एवं दान अर्थात् पराये माल पर निर्भर रहने वाले होते हैं।

कलौयुगे प्रवृत्ते तु कुम्भीपाकात्तु निर्गताः।। 92।।
मुविजाता ब्राह्मणाश्च शापदग्धाः पुरा तु ये।
संध्यात्रय विहीनाश्च गायत्री भक्तिवर्जिताः।। 93।।
वेदभक्ति विहीनाश्च पाखण्डमत गामिनः।
अग्निहोत्रादि सत्कर्म स्वधास्वाहा विवर्जिताः।। 94।।
मूल प्रकृतिमव्यक्तां नैव जानंति कर्हिचित्।
तप्तमुद्रांकिताः केचित् कामाचार रताः परे।। 95।।

कापालिका कौलिकाश्च बौद्धाः जैनास्तथापरे।
पंडिताऽपिते सर्वे दुराचार प्रवर्तकाः।। 96।।
लम्पटाः परदारेषु दुराचार परायणाः।
कुम्भीपाकं पुनः सर्वेयास्यन्ति निज कर्मभिः।। 97।।

-(देवी भागवत पुराण 12-9)

अर्थ– पूर्वकाल में शापों में दग्ध हुए लोग कलियुग के आ जाने पर कम्भीपाक नामी नरक में से निकलकर ब्राह्मण बनकर आ गये हैं। ये लोग तीनों काल की संध्या से विहीन तथा गायत्री की भक्ति से रहित होते हैं।

वेदों की भक्ति से विहीन, पाखण्ड मतों के मानने वाले, अग्निहोत्रादि सत्कर्मों से रहित होते हैं। मूल अव्यक्त प्रकृति को ये नहीं जानते हैं। तप्त मुद्रा अर्थात् मोहर से दागे हुए, विषय भोगों में तल्लीन, कापालिक, कौलिक, बौद्ध व जैन मतों को मानने वाले ये पण्डित लोग सारे के सारे दुराचारों में प्रवृत्त रहते हैं।

ये कलियुगी पौराणिक पण्डित लोग परनारियों के लम्पट, दुराचारों में लीन रहने वाले होते हैं। ये सब अपने कुकर्मों के कारण पुनः कुम्भीपाक नामी नरक में झोंक दिए जायेंगे।

विष्णु जी की प्रशंसा व शिवादि अन्य देवों की निन्दा

ब्रह्मणायः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो हरि रच्युतः।
स एव पूज्यो विप्राणां नेतरः पुरूषर्षभः।। 99।।
मोहाद्यः पूजयेदन्यं स पाखण्डी भविष्यति।। 100।।
तस्माविष्णोः प्रसादो वै येवितव्यो द्विजन्मनाम्।
इतरेषांतु देवानां निर्माल्यं गर्हितं भवेत्।। 104।।
सकृदेवहि योऽश्नाति ब्राह्मणो ज्ञान दुर्बलः।
निर्माल्यं शंकरादीनां स चाण्डालो भवेध्रुवं।। 105।।

-(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अध्याय 255 कलकत्ता)

अर्थ– ब्राह्मणों के लिए पुण्डरीकाक्ष विष्णु जी ही पूजनीय हैं, अन्य कोई भी देवता पूजा के योग्य नहीं है। मोह के वशीभूत होकर जो अन्य देवता को पूजते हैं, वह चाण्डाल हो जायेंगे, इसलिए द्विजों के लिए केवल विष्णु का ही प्रसाद सेवनीय है।

उनसे भिन्न देवता का प्रसाद ग्रहण करना गर्हित अर्थात् त्याज्य है, जो मूर्ख ब्राह्मण शंकर आदि अन्य देवता का प्रसाद खाता है वह निश्चयपूर्वक चाण्डाल हो जाता है।

विष्णु जी की निन्दा तथा शिव व उनके निर्माल्य की प्रशंसा

शिवभक्तः शुचिः शुद्धः सद्व्रतीद्रढनिश्चयः।
भक्षयेच्छिवनैवेद्यं त्यजेदग्राह्य भावनाम्।। 3।।
द्रष्ट्वापि शिवनैवेद्यंयांति पापानिदूरतः।
भुक्ते तु शिव नैवेद्य पुण्यान्या यांति कोटिशः।। 4।।
अलंयाग सहस्त्रेणाण्यलंयागार्बुदैरपि।
भक्षिते शिव नैवेद्य शिव सायुज्यमाप्नुयात्।। 5।।

-(शिव पुराण, विष्णु संहिता अध्याय 22)

अर्थ– शिव का भक्त पवित्र-शुद्ध-सद्‌वती दृढ़ निश्चय शिवजी का नैवेद्य अर्थात् प्रसाद खा ले, आग्राह्य भावना छोड़ दे। शिव नैवेद्य को देखते ही पाप दूर से भाग जाते हैं और उसके भक्षण करने से अनेक पुण्य प्राप्त होते हैं। सहस्र और अरबों यज्ञ करने से क्या लाभ? शिव का प्रसाद खा लेने से शिव सायुज्य अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वैष्णवानां सहस्त्रेभ्यः शिव भक्तो विशिष्यते।
यदि पाप रतः क्रूरा स्वाश्रमाचार वर्जितः।। 9।।

-(सौर पुराण, अध्याय 11)

अर्थ– पाप कर्मों में रत, क्रूर, कुकर्मी अपने आश्रम धर्म से रहित हो तो भी ऐसा शैव हजारों वैष्णवों अर्थात् विष्णु के भक्तों से श्रेष्ठ होता है।

देवी के पैरों के तले में पाँच महाप्रेतों का वास

ब्रह्मा विष्णुश्च रूद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।
एते पंच महाप्रेताः पाद मूले मम स्थिताः।।

-(देवी भागवत पुराण 7-40-10)

अर्थ– देवी बोली-ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, ईश्वर और सदाशिव ये पांचों महाप्रेत मेरे पैरों के तलवे में स्थित रहते हैं।

इन चन्द प्रमाणों को पुराणों से उपस्थित करके हमने यह दिखलाया है कि यदि पुराण ग्रन्थ व्यास आदि किसी भी एक व्यक्ति की रचना होते तो उनमें परस्पर विरोधी बातें, देवताओं की कहीं स्तुतियाँ व कहीं उनकी, ऋषियों व ब्राह्मणों की निन्दाएं नहीं देखने में आतीं।

अपितु इनसे यह सिद्ध हो जाता है कि ये पुराण ग्रन्थ भिन्न-भिन्न देवताओं के भक्तों द्वारा भिन्न-2 काल में बनाए गये हैं। इसलिए उनसे अलग-अलग अपने-अपने देवताओं की प्रशंसा तथा दूसरों के देवताओं तथा भक्तों की निन्दा की गयी है।

-(शेष अगले अंक में)

प्रकाश मार्ग दिखाओ!

लेखकः-टी. एल. वासवानी

क्यों दयानन्द की जीवनी उस जाति के लिये उपकारक और प्रोत्साहन देने वाली है? एक बड़ी सच्चाई-जो इस जीवन की सच्चाई -है जिसका अनुभव दयानन्द को छोटी ही आयु में हो गया यह है-'मैं सत्य के लिये हूँ' और सत्य की खोज में वह स्थान-2 पर मारे फिरते हैं। उसका साहस न्यून नहीं होता, उसका विश्वास दृढ़ है-'दयापूर्ण प्रकाश, मुझे मार्ग दिखाओ!' वह कुछ योगियों से मिलने अहमदाबाद जाते हैं, वह आबू पहाड़ को पार करते हैं और श्रीनगर तक पहुंचते हैं। वह कुछ दिन केदार घाट रह कर बड़े योगियों की तलाश में फिरते हैं परन्तु कोई नहीं मिलता। कोई कठिनाइयां इस भावी **'सत्य के सिपाही'** को नहीं डरा सकतीं।?

एक वाक्य में वह 'खोज' के इन वीरतापूर्ण दिनों के अपने एक भ्रमण का वर्णन करते हैं। सर्दी की ऋतु है। पहाड़ों की चोटियाँ और मार्ग बरफ से ढके हुये हैं। वह आगे किस तरह प्रस्थान करे? अलखनन्दा नदी सामने वह रही है। वह रास्ता पाने के लिये उसे पार करने का निश्चय करते हैं। उनके कपड़े हल्के और थोड़े हैं। सर्दी असह्य है। वह लिखते हैं 'भूंख और प्यास ने मुझे सता रक्खा था, मैंने एक बरफ का टुकड़ा निगल लिया पर कुछ आराम न मिला' वे नदी को पार करना प्रारम्भ करते हैं। नदी की सतह में बरफ के छोटे-2 टुकड़े पड़े हैं। वे उसके नंगे पैरों को काटते हैं। घाव हो जाता है और खून बहने लगता है। परन्तु ठण्डक उन्हें जड़ बना देती है। भयानक सरदी के कारण दयानन्द मूर्छित से हो जाते हैं। वह अन्ततः नदी को पार कर दूसरी ओर पहुंच जाते हैं। वह अपने शरीर के कपड़े उतार के उन से अपने पैरों को घुटनों तक ढांकते हैं। वह अशक्त और किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं। वह आगे नहीं बढ़ सकते और सहायता की प्रतीक्षा करते हैं। तब वह दो पहाड़ियों को देखते हैं जो उन्हें प्रणाम करते हैं। वे दयानन्द से कहते हैं कि 'हमारे साथ घर तक चलो-वहां हम तुम्हें भोजन देंगें' वह उत्तर देते हैं कि उसके पैर चलने में असमर्थ हैं। वह वहीं खड़ा रहते हैं और दोनों पहाड़ी परबतों की ओट में छिप जाते हैं। कुछ समय के पश्चात् उनमें शक्ति आ जाती है और वह चलते हुए बद्रीनारायण तक पहुंचते हैं, जहां उन्हें भोजन मिलता है। वह कहते हैं कि 'उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों मुझमें फिर से जीवन आ रहा हो।

1860 ई0 में दयानन्द मथुरा आते हैं वहां उन्हें नेत्रहीन संन्यासी-उनका आध्यात्मिक सहयोगी, गुरु मिलते हैं। मानों वह अब तक इन वर्षों में इस व्यक्ति की ही जिसे देव ने उनके लिये बनाया था, प्रतीक्षा कर रहा था। क्या ऋषि दयानन्द का होना सम्भव होता यदि महर्षि विरजानन्द न होते? दयानन्द अपने लेखों में स्थान-2 पर अपने गुरु को स्मरण करते हैं। अपने वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर दयानन्द लिखते हैं-"इस अध्याय का भाष्य स्वामी विरजानन्द के शिष्य दयानन्द ने बनाया" विरजानन्द

पण्डित नारायणदत्त भारद्वाज के पुत्र थे। 5 वर्ष की अवस्था में उन पर चेचक का आक्रमण हुआ जिससे वह नेत्रहीन हो गये। 15 वर्ष की आयु में वे अनाथ हो गये। उनने अपना जीवन अध्ययन और ध्यान में वे अनाथ हो गये। उनने अपना जीवन अध्ययन और ध्यान में लगाने में अर्पण कर दिया। 18 वर्ष की अवस्था में स्वामी पूर्णानन्द ने उन्हें संन्यास देकर उनका 'विरजानन्द' नाम रक्खा। यह नेत्रहीन संन्यासी एक गम्भीर वेदज्ञ विद्वान् हुये, इसमें एक बड़ा कारण है कि वे जनता में **'प्रज्ञाचक्षु'**-बुद्धि ही जिसका नेत्र है,-नाम से प्रसिद्ध थे। अलवर के राजा ने उन्हें शंकराचार्य के श्लोकों का पाठ करते हुये सुना और वे इतने प्रभावित हुये कि उनसे अलवर चलने की प्रार्थना की। संन्यासी ने इस शर्त पर जाना स्वीकार किया कि महाराजा उनसे कम से कम तीन घण्टे धर्मग्रन्थ पढ़ा करेंगे। परन्तु उनने कह दिया कि 'यदि किसी दिन तुम तीन घण्टे न पढ़ोगे तो मैं तुम्हारा राज्य छोड़ दूंगा।' महाराज बड़ी चिन्ता के साथ प्रति दिन ऋषि से पढ़ते रहे। एक दिन महाराज प्रमोदोत्सव में लग गये और स्वामी जी के पाठ से अनुपस्थित रहे। जब दूसरे समय महाराज स्वामी विरजानन्द से मिले तो उनने यह कहते हुये कि 'महाराज आपने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी पर मैं अपनी नहीं तोड़ सकता' राज्य से जाने का विचार प्रकट किया। विरजानन्द ने अलवर छोड़ दिया और भरतपुर चले गये। वहां से वे मथुरा आये जहां उनने एक संस्कृत पाठशाला खोली।

इस **'बाल ब्रह्मचारी'** और 'तपस्वी' के द्वार पर दूसरा **बालब्रह्मचारी** और तपस्वी आता है। अन्दर से आवाज आती है-'तुम कौन हो?' दयानन्द उत्तर देता है 'एक संन्यासी' तुम्हारा नाम क्या है?' दयानन्द सरस्वती' दरवाजा खुलता है। विरजानन्द दयानन्द को अपना शिष्य बना लेते हैं। किस श्रद्धा और प्रेम के साथ दयानन्द अपने गुरु की सेवा करते हैं। वह उनके प्रातःकालीन स्नान के लिये नदी से पानी लाते हैं, उनके घर के आंगन में झाड़ू लगाते हैं और प्रसन्नता पूर्वक कठोर संयम को स्वीकार करते हैं। यहाँ तक कि विरजानन्द के कठोर शब्दों को भी दयानन्द गुरु का दिया हुआ पुष्पहार समझकर स्वागत करते हैं। बहुत दिनों के पश्चात् दयानन्द गर्व के साथ अपने शरीर पर विरजानन्द की लाठी के घाव का चिन्ह दिखाकर कहा करते थे कि 'यह मेरे गुरु के प्रेम की छाप है' और जब दयानन्द ने अपने गुरु की मृत्यु का समाचार सुना तो कह उठे कि ''आज संस्कृत व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।''

मथुरा के इस नेत्रहीन गम्भीर वेदज्ञ साधु के चरणों में बैठकर दयानन्द **'ऋषि कृत ग्रन्थों'** का उन ग्रन्थों को जिन्हें भारत के आध्यात्मिक और मानसिक गौरव के दिनों में ऋषियों ने बनाया था-अध्ययन करता है। कई वर्षों तक दयानन्द ने अपने गुरु के चरणों में बैठकर वैदिक विज्ञान के अमृत का पान किया। तब वह अनुभव करता है कि अब समय आ गया है कि उसे चल देना चाहिये। उसका गुरु उसे आशीर्वाद और साथ ही यह महान् सन्देश देता है-

''मेरे पुत्र जाओ, और सन्देश को फैला दो देश में अविद्या छाई हुई है। मनुष्य पाप और पुण्य में भेद नहीं कर सकते। वे जाति और सम्प्रदायों के नाम पर लड़ते हैं और वेदों को नहीं जानते। तुम बाहर जाओ और उन्हें एक ईश्वर तथा वैदिक धर्म का सन्देश दो।''

दयानन्द बहुत वर्षों तक बाहर घूमते रहते हैं। अब वह अपना सन्देश सुनाने के लिये और उस समाधान को जो उसे वर्षों की खोज और साधन के पश्चात् मिला है ऊँचे स्वर से प्रकट करने के लिये, संसार में आता है, वह यह है–''नित्य आत्मा एक है–वह सत्, चित्, आनन्द है। उसकी सेवा से ही मोक्ष मिल सकता है।''

जब हम एकान्त से बाहर आते हुये और दूसरों के आगे अपने सन्देश के साथ खड़े हुये उसका चित्र सोचते हैं तो एक प्रभावशालिनी आकृति प्रतीत होती है। केवल जाँघ तक का एक अंगोछा उसके शरीर पर है! पुरोहित उसके आगमन मात्र से भय कम्पित हो जाते हैं। वह स्वयं भय को जानता नहीं, उसके हृदय में यह वैदिक आकांक्षा भरी हुई है–'मैं निर्भयता के साथ ज्योति को प्राप्त हो सकूं।' 'अभयं नक्तमभयं दिवा' अर्थात् रात्रि में निर्भयता और दिन में निर्भयता, बीस वर्ष तक 1863 से 1883 तक, वह अपने हाथ में '**आर्यबुद्धि का प्रदीप**' लेकर सारे देश में घूमता है। वह जाति के पुन रुज्जीवन का सन्देश सुनाता है। वह एक ईश्वर की पूजा का समर्थन करता है–और साथ ही समाज–सुधार और गोरक्षा का भी। गोरक्षा विषय पर वह 1880 के 'थियोसोफिस्ट' में एक अनुभवपूर्ण छोटा सा लेख लिखता है, जिसका कि नीचे एक महत्वपूर्ण उद्धरण है–

एक गौ मारी जाने पर 30 या अधिक से अधिक 40 आदमियों का भोजन हो सकती है। परन्तु यदि वह जिन्दा रहे तो दस सेर प्रति दिन या 7॥ मन प्रति मास दूध देती है। कल्पना करो कि उसके सब दस बच्चे होते हैं और प्रत्येक बार वह दस मास तक दूध देती है तो कुल दूध की मात्रा जो एक गाय अपने जीवन में देगी 750 मन हो जाती है। यदि एक मनुष्य के भोजन के लिये दो सेर दूध पर्याप्त समझा जावे तो एक गाय 15000 मनुष्यों का एक दिन का भोजन दे सकती है। इसके अतिरिक्त उसके बछड़ों से और भी अधिक लाभ होता है। कल्पना करो कि उसके दस बच्चे हैं, पांच बछियें और पांच बछड़े, बच्चों में से प्रत्येक उतना ही उपयोगी है जितनी कि स्वयं गौ और पांच बछियें 15000x5 =75000 मनुष्यों का भोजन दे सकती हैं। कल्पना करो कि एक बैल जब कि वह ख़ेती के काम में लगाया जाता है औसत से 8000 मन अन्न पैदा कर लेता है तो 5 बछड़े इस प्रकार 40000 मन अन्न उत्पन्न करेंगे और यदि एक मनुष्य के लिये उतना ही अन्न अर्थात् दो सेर पर्याप्त माना जावे तो पाँच बछड़े 800,000 (आठ लाख) मनुष्यों को एक दिन का भोजन दे सकते हैं। इस बात पर बिना विचारे किये कि इन बछड़ों और बछियों के सन्तानों से जो लगातार बढेंगी, कितना लाभ होगा, केवल एक गाय अपने सन्तानों सहित जब वह जीवित रहे तो 875000 मनुष्यों को भोजन दे सकती है और मार दी जावे तो अधिक से अधिक 40 मनुष्यों को।

इसके अतिरिक्त दूध और घी शरीर तथा मन दोनों के लिये माँस की अपेक्षा अधिक पौष्टिक हैं और जैसे कि अच्छे भोजन से उत्तम स्वास्थ्य होता है उसी प्रकार उससे सच्चा साहस और दूसरे मानसिक तथा शारीरिक गुण उत्पन्न होते हैं जिनके बिना किसी को वास्तविक मनुष्य नहीं कहा जा सकता।

आगरा, ग्वालियर, जयपुर, काशी, अजमेर बम्बई, पूना, कलकत्ता, पटना, जोधपुर जहां कहीं वह जाता है अपने साथ **आर्य आदर्श** जिसमें सबसे गहरा भाव **'एकता'** का है और **'आर्यसभ्यता'** का, जिसका चिन्ह 'गाय' है। सन्देश ले जाता है। उसके व्याख्यान सर्वत्र ध्यान से सुने जाते हैं जिनमें वह हिन्दू पुरोहित और पश्चिम की विदेशी सभ्यता को चैलेंज देता है। ऋषि के सम्बन्ध में एक रोचक 'स्मृति' वह है जो मिस्टर खापर्डे एम. एल. ए. ने अपने एक पत्र में लिखी है। वे लिखते हैं–

मुझे उनके साथ सम्पर्क में आने का सौभाग्य गत सदी के 70 वर्ष के उपरान्त की शताब्दी में हुआ था जबकि वे बम्बई के एक श्रीमान् साहूकार छबीलदास के सुन्दर उद्यान भवन में ठहरे हुये। वे बहुधा एक छोटी मूंज की चटाई पर बैठा करते थे और उनसे मिलने वाले, जिनकी संख्या बहुत अधिक होती थी उनके चारों ओर बैठ जाते थे। उनके बैठने वालों में किसी प्रकार की छोटी बड़ी पोजीशन का भेद न होता था परन्तु उनमें कोई भी उस चटाई को न छूता था जिस पर ऋषि बैठते थे–सिवाय उस दशा के जबकि वे उस 'रूबिकन्' को उनके चरण स्पर्श के लिये पार करे। स्वामी जी कुर्सी पर बैठकर बहुत बड़ी जनता में व्याख्यान देते थे और वे सदा 'ओ३म्' से प्रारम्भ करते थे और इसी शब्द के साथ ठीक स्वर से प्राचीन पद्धति के अनुसार उच्चारण करते हुये व्याख्यान समाप्त करते थे और जिस समय वे 'शान्तिः शान्तिः शान्ति' बोलते थे, वह देवताओं और ऋषियों के लिये दर्शनीय दृश्य होता था।

उनकी कलकत्ते की यात्रा महत्वपूर्ण है। वहां उनका केशवचन्द्र से मेल हुआ जो कि गत शताब्दी के कदाचित्, कई शताब्दियों के सबसे अधिक गहन सिद्धान्त रखने वाले पुरुषों में से थे। दोनों में पहिले दिन से ही मित्रता हो जाती है। एक अद्भुत नियम है जिसके अनुसार एक आत्मा दूसरी का आकर्षण करती है और महान् व्यक्ति एक दृष्टि में ही दूसरे महान् व्यक्ति को पहचान लेते हैं। मिलने के साथ ही केशवचन्द्र सेन ऋषि दयानन्द से पूंछते हैं 'क्या आपने केशवचन्द्र सेन देखा है? थोड़े ही प्रश्नोत्तर के बाद ऋषि उत्तर देते हैं "आप ही केशवचन्द्र सेन हैं" इसके बाद दोनों लगभग प्रतिदिन मिलते हैं और घण्टों बातचीत होती है। महान् आत्मायें किसी पूर्वनिश्चित नियम के अनुसार एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। उनके अनुयायी बहुधा लड़ा करते हैं। केशव ने ही दयानन्द के पहिले व्याख्यान का प्रबन्ध किया था और उनने ही ऋषि को हिन्दी में बोलने की सलाह दी थी। दयानन्द कलकत्ते से यह विचार लेकर लौटे कि 'वैदिक आदर्श' के प्रचार के लिये एक 'समाज' की स्थापना की जावे। 1875 में उनने बम्बई में पहिली आर्यसमाज स्थापित की। इस तरह आर्य समाज की आयु अर्धशताब्दी की है। मैं आर्यसमाज के काम के विषय में कुछ कहने की पूर्ण योग्यता नहीं रखता। मैं उसे आश्चर्यजनक समझता हूँ। आर्यसमाज के दो नियम ये हैं।

(1) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना (छठा नियम), (2) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये, (8वां नियम)

–(शेष अगले अंक में)

इन्द्रियों को वश में रखना

लेखकः–बाबू सूरजभान वकील

छूना, चाखना, सूंघना, देखना और सुनना, इन्द्रियों के ये पाँचों विषय असावधान मनुष्य को बहुत अधिक सताते हैं और तरह–तरह के मजे चखाकर–प्रलोभन दिखाकर उसे ऐसा बावला बना देते हैं कि वह अपनी सब सुधिबुद्धि भूलकर उनका गुलाम बन जाता है। यदि मनुष्य को इनमें से कोई एक ही विषय होता और असावधान मनुष्य उस एक ही विषय के वश में होकर उसी की धुन में लगा रहता हैतो शायद उसकी इतनी अधिक फजीहत न होती, परन्तु उसके गले में तो इन पाँचों विषयों का जबरदस्त फंदा पड़ा हुआ है, जिससे ये पाँचों विषय उसको अपनी ओर खींच रहे हैं और उसे अपने ही वश में कर लेने का प्रयत्न करते रहते हैं। इस कारण इन विषयों के द्वारा असावधान मनुष्य की ठीक ऐसी दशा हो जाती है जैसे कि नाटक के तमाशे में दो जोरूवाले कमजोर मनुष्य की दिखलाई जाती है। उसकी एक जोरू जो छज्जे पर रहती है उसके दोनों हाथ पकड़ उसे ऊपर को खींचती है, और दूसरी जोरू जो नीचे के मकान में रहती है टाँगे पकड़कर उसे नीचे की ओर खींचती है। इससे उसे बेचारे की जान मुसीबत में पड़ जाती है और उससे कुछ भी करते धरते नहीं बनता है। यदि वह पुरुष उन दोनों स्त्रियों में से किसी एक के वश में हो जाता है और दूसरी को अकेली छोड़ जाता है तो उसकी दूसरी स्त्री भारी उपद्रव मचाती है और सारी रात रोने पीटने और कोसने में गँवाती है और वह अपने विषय–भोग को भूल जाता है। इनके सिवा वे दोनों स्त्रियाँ अपनी अपनी सौत और उसकी संतान को सब प्रकार से तंग करने बदनाम करने और यहाँ तक कि मार डालने तक का भी उपाय करती हैं जिससे वास्तव में उसी पुरुष का नुकसान होता है। यदि इन दोनों स्त्रियों में से कोई बहुत उद्धत होकर व्यभिचारिणी बन जाती है तो इससे भी उस पुरुष ही की बदनामी होती है और वह दुनियां में मुंह दिखलाने के योग्य नहीं रहता है।

असावधान मनुष्य की ये पाँचों इन्द्रियाँ भी ऐसा ही नाटक रचती हैं और उसे अपनी ओर खींचकर उसकी खूब दुर्दशा करती है। वे उसकी विवेकशक्ति को खोकर, हानिलाभ के विचार को भगाकर और उसके सब सुप्रबन्धों को मिटाकर उसे संकट में फँसा देती हैं। ऐसी स्थिति में वह पशुओं से भी बदतर बन जाता है। परन्तु सावधान मनुष्य के लिए उसकी ये इन्द्रियाँ पाँच प्रकार के उत्तम औजारों का काम देती है कि जिनके द्वारा वह संसार की वस्तुओं के अनेक गुणों को पहिचानता है और जरूरत के अनुसार उन गुणों को अपने काम में लाता है। वह छूने (स्पर्श) के द्वारा खुरदरा चिकना, हल्का भारी, नरम कठोर और ठंडा गरम आदि जानता है, चाखने (स्वाद) के द्वारा खट्टा मीठा, कड़वा कसैला आदि स्वाद जानता है सूंघने (घ्राण) के द्वारा अनेक प्रकार की गंध पहचानता है; आँखों के द्वारा काला, पीला आदि रंग देखता है, लम्बा चौड़ा, गोल चौकोर आदि रूप जानता है, नजदीक दूर आदि अन्तर देखता है और ऊँचा नीचा

आदि स्थान का ज्ञान करता है; कानों से अनेक प्रकार के ताल, स्वर और अनेक प्रकार की बोलियाँ पहिचानता है। इन सब बातों की जानकारी प्राप्त करके वह अपने सुख के अनेक कार्य साधता है और दिन पर दिन उन्नति करता जाता है।

परन्तु इन पाँचों इन्द्रियों से काम लेने में मनुष्य की वही दशा होती है जो सरकार के तमाशे में दो घोड़ों के सवार की होती है, जो कभी तो अपना एक पैर एक घोड़े की पीठ पर और दूसरा पैर दूसरे घोड़े की पीठ पर रखकर खड़ा हो जाता है और दोनों घोड़ों को दौड़ाये चला जाता है, और कभी एक घोड़े की पीठ पर तो बैठ जाता है और दूसरे की पीठ पर अपनी टाँगें रख देता है, और कभी किसी दूसरी ही तरह से बैठता है, परन्तु प्रत्येक अवस्था में अपने दोनों घोड़ों को एक ही सी चाल में ले जाता है। सरकस के इस सवार को हर वक्त बड़ी सावधानी से काम लेना और दोनों घोड़ों को अपने काबू में बनाये रखना पड़ता है। क्योंकि अगर एक घोड़ा जरा भी आगे पीछे हो जाय, या दोनों ही घोड़े काबू से बाहर होकर ऐसी तेजी से भागने लगें कि सवार सँभल न सके तो सवार की कमबख्ती आ जाय और उसकी टाँगें चिर जायँ, या वह धड़ाम से नीचे आ गिरे, या अन्य किसी आपत्ति में फँस जाय। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपनी इन्द्रियों से काम लेने में बड़ी सावधानी रखने की आवश्यकता पड़ती है और उनको अच्छी तरह अपने वश में करना पड़ता है। यदि वह किसी समय जरा भी असावधानी करता है तो ये इन्द्रियाँ उसको धर दबाती हैं और उसे नीचे डालकर मिट्टी में मिला देती हैं।

सरकस का खिलाड़ी तो दो घोड़ों पर ही सवार होता है, परन्तु मनुष्य को अपनी पाँचों इन्द्रियों पर सवार होना पड़ता है जो सरकस के घोड़ों से भी अधिक बलवान् और चंचल हैं। इसलिए अपनी इन्द्रियों से काम लेने में मनुष्य को बहुत सावधान रहना चाहिए तथा अपनी पाँचों इन्द्रियों को भली भांति वशीभूत करके उनकी चाल ढाल पर पूरी-पूरी देखरेख रखनी चाहिए। इन इन्द्रियों को काबू में रखने के लिए मनुष्य को ऐसी सावधानी रखनी उचित है जैसी कि गोलियाँ उछाल कर तमाशा दिखाने वाला रखता है। वह दस-दस, बारह-बारह और कभी-कभी इससे भी अधिक गोलियाँ ऊपर को उछालने लगता है। वह एक को उछालता है और दूसरी को पकड़ता है, फिर उसको उछलता है और तीसरी को पकड़ता है, इस प्रकार सभी गोलियों का एक ऐसा ताँता बँध देता है कि सभी गोलियाँ ऊपर को जाने लगती हैं और उनमें से एक-एक गोली क्रम से उसके हाथ में आती जाती है जिसको वह फिर उछालता जाता है और दूसरी को पकड़ता जाता है। इस खेल में उसको आकाश में उछलती हुई सभी गोलियों का पूरा-पूरा ख्याल रखना पड़ता है। वह न तो किसी गोली को ऐसा बेतौर उछलने देता है कि वह अधिक ऊँची चली जाय, या इधर-उधर निकल जाय, और न किसी गोली को इस तरह उतरने ही देता है कि वह जमीन पर गिर जाय; बल्कि वह सभी गोलियों को अपने काबू में रखता है और जिस तरह चाहता है उनको नचाता है।

इसी प्रकार मनुष्य को भी उचित है कि वह अपनी पाँचों इन्द्रियों से काम लेता रहे, परन्तु किसी इन्द्रिय को इस प्रकार न उछलने दे कि वह उसकी जरूरत से बाहर निकल जाय या इधर-उधर विचल

जाय; बल्कि अपना समय, अपनी अवस्था, अपनी हैसियत, अपनी परिस्थिति, अपनी आमदनी और खर्च, अपना आगा पीछा, सुख–दु:ख, हानि लाभ और सब प्रकार की जरूरतों का विचार करके तदनुसार अपनी इन्द्रियों को चलावे और अपनी सभी इन्द्रियों का समुचित उपयोग करके उनसे पूरा–पूरा आनन्द उठावे। परन्तु कभी भूलकर भी इन्द्रियों के वश में न होवे और न कभी किसी इन्द्रिय से जरूरत से अधिक काम ही लेवे; बल्कि हर समय अपनी विवेकबुद्धि से काम लेता रहे और जिस समय जैसा उति समझे वैसा ही करे और अपनी इन्द्रियों को भी उसी प्रकार परिचालित करता रहे। ❁❁❁

पृष्ठ सं. 4 का शेष–

झकझोरने वाला भी बनेगा।

देख आकाश में 'सविता' भी चमक रहा है, और 'सविता' नाम का प्रेरक एवं जगदुत्पादक जगदीश्वर भी अंगड़ाइयाँ ले रहा है। इनसे भी तू कुछ प्रेरणा ग्रहण कर। सविता सूर्य 'मित्रवर्धन' है, जो भी ग्रह, उपग्रह आदि उसके क्षेत्र में आता है, उसे वह अपना मित्र बनाकर अपनी परिक्रमा करवाने लगता है। परमेश्वररूप 'सविता' भी सबको शुभ प्रेरणा ही देता है, जो उसकी सत्प्रेरणा को सुनते हैं और उसे अपने जीवन में क्रियान्वित करते हैं, वे तर जाते हैं। वह सबका मित्र होकर मैत्री का निर्वाह करता है। राजा भी अपने राज्यकाल में इन सविताओं से मैत्री की शक्षिा लेकर 'मित्रवर्धन' बने, अधिक से अधिक राष्ट्रों को अपना मित्र बनाये, उनमें कुछ उसके करदाता मित्र राष्ट्र हो सकते हैं और कुछ स्वतंत्र मित्रराष्ट्र भी हो सकते हैं। मित्र, शत्रु और उदासीन तीन प्रकार के राष्ट्र होते हैं, उनमें मित्र राष्ट्रों को बनाना ही स्व–कल्याणकारी और पर–कल्याणकारी होता है। मित्र राष्ट्रों पर चौकसी अवश्य रखनी चाहिए कि कहीं वे शत्रुराष्ट्र से मिलकर बगाबत न कर दें। ❁❁❁

सत्य प्रकाशन के पुनः प्रकाशित उपलब्ध प्रकाशन

वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	**मूल्य 40)**	**दयानन्द और विवेकानन्द**	**मूल्य 15)**
बाल सत्यार्थ प्रकाश	**मूल्य 30)**	**बाल मनुस्मृति**	**मूल्य 12)**
यज्ञमय जीवन	**मूल्य 30)**	**इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ**	**मूल्य 12)**
मील का पत्थर	**मूल्य 20)**	**ओंकार उपासना**	**मूल्य 12)**
भ्रांति दर्शन	**मूल्य 20)**		

सत्साहित्य का प्रचार–प्रसार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

गतांक से आगे–

ब्रह्मचर्य-विज्ञान

लेखकः–जगन्नारायणदेव शर्मा

धर्म और ब्रह्मचर्य

"धर्मेणैव जगत्सुरक्षितमिदम्।"

"धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा,
प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण।" –(नारायणोपनिषत्)

धर्म से ही यह संसार सुरक्षित है। धर्म से ही इस सृष्टि की मर्यादा है। धर्म से ही प्रजा अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकती है।

विचार–दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि वास्तव में धर्म मनुष्य–जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक साधन है। धर्म से ही सब प्रकार की उन्नतियाँ हो सकती हैं। धर्म मनुष्य की उस योग्यता का नाम है, जिसके आश्रय से, वह अपने पद को सार्थक बनाता है। जैसे अग्नि का धर्म उष्णत्व–जल का तरलत्व है, वैसे ही इस शरीर का धर्म संयम–नियम और आत्मा, का ब्रह्मचर्य है। जो पदार्थ अपने धर्म को छोड़ देता है, वह उसी समय अपने अस्तित्व को भी खो बैठता है।

उन्नतिं निखिला जीवा, धर्मेणैव क्रमादिह।
विदधानाः सावधाना, लभन्तेऽन्ते परं पदम्।। –(महर्षि व्यास)

इस लोक में समस्त जीव धर्म से ही विकास को प्राप्त करते हैं। धर्म के नियमों को पालने वाले, और उसके साधन में सावधान रहने वाले नर ही अन्त में उत्तम पद के अधिकारी होते हैं, अन्य नहीं!

महर्षि कणाद ने अपने ग्रन्थ में धर्म की बहुत ही विश्व व्यापक तथा अकाट्य परिभाषा की है, जो सदा और सर्वत्र एक सी घटती है, उसे हम यहाँ देते हैं–

"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः सधर्मः।" –(वैशेषिक दर्शन)

जिस उपाय के अवलम्बन से इस लोक तथा परलोक–दोनों का सुख प्राप्त हो, उसे धर्म कहते हैं। इसके विपरीत अधर्म है।

'अभ्युदय' नाम है–ऐहिक उन्नतियों का। सुन्दर स्वास्थ्य, दीर्घ–जीवन, प्रचुर–सम्पत्ति, सुयश तथा अच्छी सन्तान को ही लोग इस लोक की उन्नतियों में गिनते हैं। ये सभी उन्नतियाँ 'ब्रह्मचर्य' के अधीन हैं। एक ब्रह्मचारी पुरुष–इन सबों को सहज में प्राप्त कर लेता है।

'निःश्रेयस' नाम है–पारलौकिक विकास का। आत्मानन्द, जीव–दया, परमोत्साह, उच्च कर्तव्य–शीलता, सद्ज्ञान और मोक्ष, इनकी गणना पारलौकिक विकास में है। ये सभी ब्रह्मचर्य के प्रताप

से सुलभ हैं। एक ब्रह्मचारी इन्हें कुछ ही दिन के सद्भ्यास से, निश्चय रूप से अधिकृत कर लेता है।

किंबहुना एक ही ब्रह्मचर्य में धर्म के दोनों उद्देश्यों की सिद्धि हो जाती है। अतएव हम ब्रह्मचर्य को ही धर्म का साक्षात् स्वरूप समझते हैं।

ब्रह्मचर्य शरीर और आत्मा का प्रधान धर्म है। इससे शारीरिक तथा मानसिक विकास स्वयं हो जाता है। इसलिये ब्रह्मचर्य को सर्वप्रथम स्थान मिला है।

एक बार नारद जी भगवान् विष्णु के पास वैकुण्ठ में गये। अभिवादन तथा कुशल-प्रश्न के पश्चात् नारद जी ने भगवान् से पूछा कि महाराज! मैं आप से कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। इस पर विष्णु भगवान् ने उन्हें पूछने की आज्ञा दी।

उन्होंने पूछा कि हे सबके हृदय की बात जानने वाले प्रभो! आप की माया में सब जीव भूले हैं। भला यह तो बताइये कि आपको सबसे प्रिय वस्तु क्या है? मैं आपके ही श्रीमुख से यह रहस्य प्रकट कराना चाहता हूँ।

नारद जी का प्रश्न सुनकर भगवान् बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि हे ऋषिवर! आपने संसार के लाभ की इच्छा से यह प्रश्न किया है, अतएव मैं आप से अपने मन की बात बतलाता हूँ। मुझे ब्रह्मचर्य-धर्म सब से प्रिय है। जो पुरुष मन, वचन तथा कर्म से इसका उचित रीति से पालन करता है, वह निश्चय ही मुझको प्राप्त होता है। यही कारण है कि बड़े-बड़े योगी लोग ब्रह्मचर्य-सिद्धि के अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहते। जीव के लिये ब्रह्मचर्य से बढ़कर दूसरा धर्म त्रिलोक में नहीं। इस पर नारद जी भगवान् की स्तुति कर वहाँ से प्रसन्नचित्त होकर अन्य कहीं के लिये विदा हुये।

सदाचार और ब्रह्मचर्य

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तद्यद्देवेतरोजनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते।। -(श्रीभगवद्गीता)

श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, वैसा दूसरे लोग भी उनकी देखा-देखी करते हैं, और वे जो कुछ नियम निर्धारित करते हैं, लोग उन्हीं के अनुकूल चलने लगते हैं।

"आचारः प्रथमो धर्मः।" -(मनुस्मृति)

सदाचार ही परम धर्म है। भगवान मनु ने उपर्युक्त शब्दों में सदाचार को प्रधानता दी है।

वास्तव में मनुष्य-जीवन का सार सदाचार है। सदाचार से ही, दोनों ही, व्यक्तिगत तथा सामाजिक सुधार हो सकते हैं। जो जाति, और जो देश अपने सदाचार से पतित नहीं होता, वह अपनी सुखमय अवस्था से हीन नहीं हो सकता है।

सदाचार का अर्थ है-सज्जनों का आचरण। वे उत्तम नियमित, जिन पर कि उच्च पुरुष चलते है-अथवा शास्त्र-सम्मत वे कार्य, जिनके करने से मनुष्य समाज को सुख और शान्ति मिलती है।

यह बात सभी लोग जानते हैं कि हमारे ऋषि-महर्षि सदाचारी और श्रेष्ठ पुरुष थे। उनके

निर्धारित किये हुये कर्म भी सदाचार हैं। वे जैसा आचरण करते थे, वैसा ही प्रजा को भी करने का उपदेश देते थे। वे भी ब्रह्मचर्य को सदाचार मानते थे। यही कारण था कि प्राचीन कालिक जनता ब्रह्मचर्य के पालन में अत्यधिक उद्यत थी।

धर्मज्ञ-शिरोभूषण मनु ने सदाचार से प्राप्त होने वाले उत्तम फलों का इस प्रकार वर्णन किया है-

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।

आचाराद्धन मक्षय्य माचारो हन्त्यलक्षणम्।। -(मनुस्मृति)

सदाचार का पालन करने से मनुष्य को दीर्घायु, मन चाही सन्तान और अमित धन मिलता है। सदाचार से अनेक दुर्गुण भी नष्ट हो जाते हैं। वे फिर कहते हैं-

सर्व लक्षण-हीनोऽपिः यः सदाचारवान्नरः।

श्रद्दधानोऽनसूयश्च, शतं वर्षाणि जीवति।। -(मनुस्मृति)

सब शुभ लक्षणों से रहित होने पर भी, जो सदाचारी पुरुष है-शास्त्रों पर श्रद्धा रखने वाला और ईर्ष्या से घृणा रखने वाला है, वह सौ वर्षों तक जीता है।

अब हमारे पाठक भली भाँति समझ गये होंगे कि सदाचार मनुष्य-जाति का कितना हित करने वाला साधन है। अतः इसका पालन करना भी कितना आवश्यक है।

ऊपर जिन ऊँचे उद्देश्यों की सिद्धि सदाचार से होती है, सो सब ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत हैं। अतएव वह सदाचार यही ब्रह्मचर्य है। हम सदाचार को ब्रह्मचर्य से पृथक् नहीं कर सकते।

हमारे विचार से 'ब्रह्मचर्य' ही मूल सदाचार है। क्योंकि सदाचार के जितने गुण हैं, वे सब इसके भीतर आ जाते हैं।

जैसे सदाचार से समस्त दोषों का नाश होता है, वैसे ब्रह्मचर्य से भी किया जा सकता है। अतः ब्रह्मचर्य सदाचार भी सिद्ध हो गया। ब्रह्मचारी ही सच्चा सदाचारी है।

तप और ब्रह्मचर्य

"**तपो वै ब्रह्मचर्य।**" -(श्रुति)

वास्तव में ब्रह्मचर्य ही तप है।

"**तपो मे हृदयं साक्षात्।**" -(भगवान विष्णु)

तप मेरा साक्षात् हृदय है।

पुराणों तथा और अच्छे ग्रन्थों में लिखा है कि भारत के ऋषि महर्षि तप करते थे-उन लोगों का जीवन प्रायः तप के अनुष्ठान में ही बीतता था। यही कारण था कि वे अपने तपोबल से पृथिवी पर मनुष्य-जाति का महान् हित कर, आदरणीय बनते थे।

ऊपर की बात जानकर मन में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वह तप क्या था? हमारे विचार से वह 'ब्रह्मचर्य' ही था। उसकी की रक्षा के लिये विविध प्रकार के उपाय किये जाते थे। उसी की एक मात्र

साधना से बड़ी-2 सिद्धियाँ प्राप्त होती थीं। उसको एक बार खण्डित होने से भी तपस्वियों के अनेक वर्ष का परिश्रम और अनुष्ठान नष्ट हो जाता था। वे जो कुछ करना चाहते थे, वह मनोरथ नहीं सधता था। वे लोग उसी ब्रह्मचर्य की रक्षा करने के लिये नगरों को त्याग कर वनों में तथा पर्वतों पर जा कर रहते थे। फलाहार कर अपने शरीर को क्षीण कर देते थे। बहुत से लोग वृक्षों के पत्तों, वनस्पतियों तथा वायु पर ही अपना निर्वाह करते थे। देह के दुर्बल हो जाने से उन्हें काम-विकार नहीं सताता था। काम-विकार के न उत्पन्न होने से उनका वीर्य रक्षित रहता था। वीर्य के सुरक्षित रहने से आत्म-तेज बढ़ता था, जिसका चित्त में शान्ति आती थी। चित्त के स्थिर हो जाने के कारण, वे योग कर सकते थे। अर्थात् मन को आत्मा या परमात्मा में लीन करते थे। इस प्रकार उन्हें उस ज्ञान या परमानन्द की प्राप्ति हो जाती थी, जिससे वे मुक्ति-पद (परम शान्ति) को पा जाते थे।

अब पाठक समझ गये होंगे कि ब्रह्मचर्य ही वह परम तप था। उसी का पालन करने के लिये जन्म भर यत्न किये जाते थे। अनेक विघ्न पड़ने पर भी यह महाव्रत नहीं छोड़ा जाता था। जो तपस्वी अपनी इस साधना में सफल हो जाते थे, वे ही सफल मनोरथ होते थे। इसी से भगवान शिव ने इस प्रकार अपने हृदय का भाव प्रकट किया है-

"न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यंतपोत्तमम्।" -(तन्त्रशास्त्र)

अर्थात् तप कुछ नहीं है। ब्रह्मचर्य ही उत्तम तप है।

इस अवतरण से भी हमें यही भासता है कि शिवजी ने भी ब्रह्मचर्य को ही उत्तम तप माना है। अतः हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्मचर्य ही परम तप है, और इसको पालन करने वाला पुरुष ही सच्चा तपस्वी है।

भगवान श्री कृष्ण ने अपनी गीता में शारीरिक, वाचिक और मानसिक-इन तीन प्रकार के तपों का वर्णन किया है। उसे हम यहाँ देते हैं-

देवद्विजगुरुप्राज्ञ-पूजरं, शौच मार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च, शारीरं तप उच्यते।। -(श्रीभगवद्गीता)

देव, द्विज, गुरु और विद्वान् की पूजा (सत्कार) पवित्रता और सरलता, तथा ब्रह्मचर्य और अहिंसा को शारीरिक तप कहते हैं।

अनुद्वेग-करं वाक्यं, सत्यं प्रिय हितंचयत्।
स्वाध्यायाव्यसनं चैव, वाङ्मयं तप उच्यते।। -(श्री भगवद्गीता)

अर्थात् चित्त की प्रसन्नता, सौम्यता, मननशीलता, विषयों से विरक्तता तथा भावों की शुद्धता को मानसिक तप कहते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण के मत से भी ब्रह्मचर्य की गणना शारीरिक तप में हुई है। पर हमारे विचार से ऊपर जिन तपों का वर्णन किया गया है, वे सभी साधनायें, एक ब्रह्मचर्य के ही अन्तर्गत आ जाती हैं। ब्रह्मचर्य के बिना पालन किये, वे कदापि निबह नहीं सकतीं। अतएव ब्रह्मचर्य को महातप जानना चाहिये।

-(शेष अगले अंक में)

गतांक से आगे–

देशभक्ति के प्रेरक कवित्त

रचियताः रोहित आर्य, मोबा0 8958682489

(15)

कोई दूध मांगता था और जिद ठानता था,
देने को तैयार रहे अब तक खीर को।
अब न जमीन देंगे उसको भी छीन लेंगे,
और ना ही देंगे भारती के हम चीर को।
किसी ने नापाक पैर धरने की भूल की तो,
गोलियों से भून देंगे उसके शरीर को।
हड्डियाँ मरोड़ देंगे जबड़े को तोड़ देंगे,
कोई गर माँगेगा हमारे कश्मीर को।।

(16)

राष्ट्र की स्वतन्त्रता को नारियों ने योग दिया,
सब कुछ होम कर दिया बलिदान है।
अपना सिन्दूर दिया, शत्रु दम्भ चूर किया,
विधवा बनी हजारों अनुपम दान है।
कोख सूनी कर दी थी राखी दान कर दी थी,
लेके तलवार लड़ी खुद भी संग्राम है।
जीवन को होम कर देश को बचाने वाली,
बलिदानी त्यागी नारी जाति को प्रणाम है।

(17)

जिन धीरे वीरों ने दिलाने को स्वतन्त्रता को,
राष्ट्रयज्ञ में जलाया पावन शरीर को।
काटने गुलामी वाली बेड़ी शीश दान किया,
करते प्रणाम हम उन शूरवीर को।
जिनके न बाप दादा चढ़े कभी फाँसियों पे,
समझ न पायेंगे शहादतों की पीर को।
उन रण बाँकुरों को गालियाँ जो दे रहे हैं,
ऐसे नीच पापियों की छातियों को चीर दो।।

(18)

खोये हुए भारती के गौरव को लाओ और,
वापस ले आओ तुम गुम हुई बहार को।
मार–मार शत्रुओं के दम्भ को मिटाओ और,
फिर से सुनाओ तुम धनुष टंकार को।
चीन हो अमेरिका हो चाहे पाक घेरता हो।
उन सबको सुना दो अपनी ललकार को।
तब भी न माने यदि और जिद ठाने गर,
लेके तलवार शीश उसका उतार दो।।

(19)

बार–बार युद्ध वाले दंश हमने सहे हैं,
किन्तु चलने न देंगे अब किसी चाल को।
डालेगा जो भारती के आँचल पै दृष्टि गर,
मार ठोकरें कुचल देंगे उस भाल को।
शत्रुओं के मस्तकों को मुठ्ठियों में भींच–भींच,
चूर–चूर कर देंगे उनके कपाल को।
अब किसी भाँति नहीं कोई भी दया दिखेगी,
भूसा कर देंगे हम खींच कर खाल को।।

(20)

प्रेम, शौर्य और राष्ट्र भक्ति से भरा हुआ जो,
सदा यूँ ही मेरा प्यारा देश ये आबाद हो।
अबके प्रहार गर भारत पै पाक करे,
नाम व निशान मिटे ऐसा बरवाद हो।
रक्त की नदी बहा दो, दम्भ उसका मिटा दो,
भीषण प्रचण्ड भारतीय शंखनाद हो।
सीमा का विस्तार इतना करो कि भारत में,
पिण्डी हो कराँची और इसलामाबाद हो।।

(21)

जिन दिन ईंट का जबाब देंगे पत्थर से,
सम्मुख हमारे कोई नहीं अड़ पायेगा।
परमाणु वाले हाथ हमने दिखाये यदि,
छोटा सा पाक भला कैसे लड़ पायेगा।
कायरता त्याग ले शहादतों की आग जब,
दिल्ली की गद्दी पै कोई शेर चढ़ जायेगा।
जिस दिन मिलेगा पटेल इस देश को तो,
इसलामाबाद में तिरंगा गढ़ जायेगा।।

(22)

काशमीर भारत का है अभिन्न अंग सुन,
तू क्या सोचता है इसे यूँ ही छोड़ देंगे हम।
कई बार तुझको किया है माफ किन्तु सुन,
बार-बार सोच मत तुझे छोड़ देंगे हम।
पहले भिड़ा तो बेटा लाहौर भी खो दिया था,
अब दम्भ तेरा फिर से निचोड़ देंगे हम।
मानचित्र में न तेरा नाम न निशान होगा,
राम की कसम इतिहास मोड़ देंगे हम।।

(23)

लाख समझाओ पर दुष्ट नहीं मानता है,
हाथ-पैर जोड़ो चाहे आरती भी कीजिये।
क्रान्ति के बिना कभी भी शान्ति नहीं मिलती है,
ये विचार आप निज ध्यान धर लीजिए।
रोज-रोज पाक यहाँ हमले जो करता है,
मेरी है तमन्ना आप काम एक कीजिए।
चन्द घण्टों में न पाकिस्तान का पता चलेगा,
एक बार सेना को आदेश कर दीजिए।।

(24)

देश की अखण्डता को खण्ड-खण्ड कर दें जो,
नेता होंगे ऐसे पर हम नहीं स्वार्थी।
विश्व जीतने का स्वप्न मन में सजा के आये,
मार-मार हमने भगाये हैं महारथी।
आँख जो उठेगी उस आँख को निकाल लेंगे,
किसी भाँति अब न कराहेगी ये भारती।
कोई गर डालेगा कुदृष्टि मेरे भारत पै,
गोलियों से भून के करेंगे हम आरती।।

(25)

केसरिया रंग शौर्य का प्रतीक है हमारे,
जिसमें लिखी हैं कई गाथा बलिदान की।
श्वेत वर्ण शान्ति का सन्देश देता जग को है,
शान्तिप्रिया हमारी एक पहचान थी।
हरा रंग भारती की हरियाली को दिखाता,
चक्र है दिखाता हमें चलने की बान थी।
देकर के रक्त किया हरा-भरा भारत को,
तिरंगे के तीन रंगों में हमारी जान थी।।

(26)

राणा व शिवा से सिंह पुरुषों के वंशज हैं,
बट्टा लगने न देंगे भारती की शान में।
बीच में बिचौलिया न कोई अबके चलेगा,
तुझको बचाने वाला होगा न जहान में।
सम्मुख हमारे गर लड़ने को आयेगा तो,
सीधा पहुँचेगा अबके तू शमशान में।
मात भारती की है सौगन्ध इस बार हमें,
गाढ़ देंगे पावन तिरंगा पाकिस्तान में।।

(27)

भारतीय सैनिकों के पावन पुनीत बलिदान,
का तो मूल्य कभी चुक नहीं सकता।
राम और कृष्ण वाले रक्त का उबाल है जो,
सदा उबलेगा कभी रुक नहीं सकता।
राणा व शिवाजी की परम्परा से जो मिला है,
वो प्रचण्ड शौर्य कभी लुक नहीं सकता,
भारतीय रणबाँकुरों को जग जानता है,
शीश कट जाये पर झुक नहीं सकता।।

(28)

राम और कृष्ण वाले रक्त का उबाल है जी,
दैत्य से डरे हैं न शैतान से हैं हारते।
आये गर राष्ट्र पर कैसी कोई आपदा तो,
मिलके माँ भारती के संकट हैं टारते।
अच्छे-अच्छे दम्भियों के दम्भ को किया है चूर,
हम भारतीय रौद्र रूप जब धारते।
दुष्ट पाक तुझे किया बार-बार माफ क्योंकि,
शेर बब्बर हैं हम कुत्ते नहीं मारते।।

(29)

भारती के बेटों में न हो कभी भी युद्ध किन्तु,
उग्रवाद के विरुद्ध दंगा मांगता हूँ मैं।
छोड़ मत-पंथ-सम्प्रदाय और जाति-धर्म,
राष्ट्रप्रेम की दिलों में गंगा मांगता हूँ मैं।
हिन्दू मुसलिम सिख बौद्ध जैन ईसाई को,
राष्ट्रभक्ति से ही मात्र रंगा मांगता हूँ मैं।
भारत की मिट्टी में ही त्यागूँ निज प्राण और,
अपने कफन को तिरंगा मांगता हूँ मैं॥

(30)

भारतीय सैनिकों के पावन पुनीत बलिदान,
का तो मूल्य कभी चुक नहीं सकता।
राम और कृष्ण वाले रक्त का उबाल है जो,
सदा उबलेगा कभी रुक नहीं सकता।
राणा व शिवाजी की परम्परा से जो मिला है,
वो प्रचण्ड शौर्य कभी लुक नहीं सकता।
जो हमारे तन-मन, जन-जन में बसा है,
लाड़ला तिरंगा कभी झुक नहीं सकता॥

(31)

जब कभी स्वाभिमान रक्षा का जो जिक्र हुआ,
एक नाम वीर सिंह राणा जी का आयेगा।
पशुओं की शूरता की कभी जो प्रशंसा हुई,
नाम स्वामिभक्त वीर चेतक भी पायेगा।
दानियों की दिव्य सूची कभी जो बनाई गई,
एक नाम कवि सेठ भामा का भी गायेगा।
ऐसा है ये दिव्य शौर्यपूर्ण पुण्य इतिहास,
ऐसा इतिहास कोई दूसरा न पायेगा॥

(32)

राणा का वो रक्तचूस दिव्य भाला देखते ही,
मुगलों की सेनाओं के छक्के छूट जाते थे।
शोणित को पीने वाली तलवार ताकते थे,
जान की वो अपनी तो खैर ही मनाते थे।
राणा जी ये शस्त्र लेके जिधर भी मुड़ गये,
मुगलों की मुण्डियों के ढेर लग जाते थे।
राणा जी के हाथों से ये भीषण संहार देख,
अकबर के भी तो पसीने छूट जाते थे॥

(33)

राणा की प्रचण्ड तलवार के प्रहार से जी,
कँपकँपी उठती थी नभ-जल-थल में।
सर्प के समान रक्त चूसती ही जा रही थी,
भगदड़ मच गई मुगलों के दल में।
किसी का था हाथ टूटा, किसी का कपाल फूटा,
समर में मची हुई इस हलचल में।
अल्लाह बचाओ हमें, अल्लाह बचाओ हमें,
यही थी पुकार बस शत्रुओं के दल में॥

(34)

जिसने थी सीता हरी, बन्द वाटिका में करी,
अत्याचारी रावण की नाश किया राम ने।
बन्धु-बान्धवों के साथ किये चार-चार हाथ,
रावण के वंश का विनाश किया राम ने।
भय के बिना तो प्रीति सिर्फ कोरी कल्पना है,
ऐसा मेरे देश को विश्वास दिया राम ने।
आताताई राक्षसों का वध ही विकल्प है जी,
मातृभूमि रक्षा मन्त्र खास दिया राम ने॥

(35)

देशद्रोही नीच पापियों की बात का न मानो,
भारतीयता को लाओ त्यागो अब नींद तुम।
अब्दुल कलाम के समान बन जाओ और,
राष्ट्रभक्ति भरे दिल से मनाओ ईद तुम।
देश की स्वतंत्रता को फाँसी पर चढ़ गया,
फिर से जगाओ अशफाक सी उम्मीद तुम।
मार-मार शत्रुओं के दम्भ को निचोड़ दे जो,
बनके दिखाओ फिर अब्दुल हमीद तुम॥

(36)

स्वाभिमान रक्षा हेतु घास की भी रोटी खायी,
कितने ही कष्ट झेले नहीं आन-बान दी।
स्वाभिमान देश का तो झुक नहीं सकता है,
चित्तौड़ ने ऐसी हमें एक दिव्य शान दी।
देश अपने पै निज शीश को चढ़ा दो खुद,
चेतक ने ऐसी ही मिसाल है महान दी।
देशभक्ति सीखनी तो सीखो तुम चेतक से,
देश पर एक पशु घोड़े ने ही जान दी॥

(37)
असि लेके अरि के अलग किये अंग-अंग,
छिटक-छिटक अंग-अंग गिरने लगा।
घनन-घनन घनघोर घटा घिरती थी,
देख असि का ये रूप काल डरने लगा।
भाले के प्रहार से थे गात हुए भाग-भाग,
देख भाग-भाग, भाग-भाग मचने लगा।
देख दशा दानव दरिन्दे दुष्ट मुगलों की,
क्रूर काल कम्पित कुलाँच भरने लगा।।

(38)
शाहों का था शाह वो औरंगजेब क्रूर दुष्ट,
दुष्टता करी थी, किया अत्याचार अति का।
तलवारों को चलाके हिन्दू जन को मिटाके,
चाहता था करना विरोध काल गति का।
आया शेर रोकने को उसको तो ठोकने को,
जो था प्रतिमूर्ति अदम्य शौर्य, मति का।
भारती का लाल माता जीजा का वो शेर पुत्र,
करता हूँ वन्दन मैं शिवा छत्रपति का।।

(39)
जननी व जन्मभूमि से नहीं है श्रेष्ठ कुछ,
माना जिसने वो बड़े देशभक्त राम थे।
पाकर इशारा सारा राजपाट छोड़ दिया,
पितु आज्ञा पालन में बड़े सख्त राम थे।
ऋषि-मुनियों के कष्ट संकट उबारने को,
दुष्ट-दानवों से लड़े हर वक्त राम थे।
रावण को मार विभीषण को दिया था राज,
पर उपकार में ही रहे व्यस्त राम थे।।

(40)
कंस का अत्याचार बढ़ रहा, केशव चक्र को धारो तुम।
शिशुपाल बकवास कर रहा, धड़ से शीश उतारो तुम।
बहुत हो चुका बजा बांसुरी, छोड़ो अब मनुहारों को।
पुनः दिलाने शान्ति जगत को, अर्जुन संग पधारो तुम॥

(41)
मत, मजहब और सम्प्रदाय को, कभी न मन में लायेंगे हम।
देशभक्त लोगों के आगे अपने शीश झुकायेंगे हम।
काम अगर याकूब से हुए उसको फाँसी चढ़ना होगा।
ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम को, सदियों नहीं भूलायेंगे हम॥

(42)
हजारो वर्ष से जो खो गया, गौरव हमारा है।
वो अब भी खो रहा बिलकुल नहीं, हमने सँवारा है।
उठो मित्रो नशा छोड़ो, जरा कुछ तो विचारो अब।
रे प्यारे नौजवानो तुमको फिर, माँ ने पुकारा है॥

(43)
शब्द-शब्द में देशभक्ति ही मेरी पूजा है,
राष्ट्रभक्ति का मन्त्र ही मेरे दिल में गूँजा है।
फाँसी चढ़कर भी भारत आजाद करूँगाा मैं,
भारत की आजादी ही मेरी महबूबा है॥

(44)
वक्त है अब लेखनी तू ना कोई श्रृंगार लिख,
ना गुलाबी गाल लिख ना पुष्प, चन्दन, हार लिख।
पत्थरों को चूर कर दे रोक दे तूफान जो,
देशभक्ति जो जगा दे वो अखिल अंगार लिख॥

(45)
शहीदों के गुलामी छोड़ते अरमान लिक्खूँ मैं,
कि भारत देश का प्राचीन गौरव मान लिक्खूँ मैं,
ये मेरी लेखनी जब-जब लिखे तो हे मेरे ईश्वर,
हरेक दिल में हरेक धड़कन में हिन्दुस्तान लिक्खूँ मैं॥

(46)
आज मेरा देश फिर तुमको पुकारता है,
एक बार कृष्ण देश देखने को आइये।
कब से सुना रहे हो मुरली की तान तुम,
अब जरा गीता वाले ज्ञान को सुनाइये।
शिशुपाल देने में लगा है गालियाँ अनन्त,
करके प्रहार जरा मृत्यु से मिलाइये।
देश को संवारने को कंस को भी मारने को,
छोड़ मुरली को अब चक्र को उठाइये।।

(47)
देश की अखण्डता को शत्रु से बचाने में जी,
सैनिकों की मौत का पवित्र एक राज है।
हम यहाँ चैन से यूँ जिन्दगी गुजारते हैं,
पर सैनिकों को गोली तोप की आवाज है।
गोले, तोप, बम्ब, राइफल न बन्दूक हैं ये,
भारती की आरती को सजा हुआ साज है।
वीर सैनिकों की दी शहादत के कारण ही,
भारती के शीश पै सुरक्षित ये ताज है।।

❀❀❀

गतांक से आगे–

ब्रह्मचर्य

लेखकः–पण्डित सत्यव्रत

ब्रह्मचर्य का फल

ब्रह्मचर्य की चर्चा जितनी पंजाब और युक्त–प्रान्त में है इतनी शायद अन्यत्र कहीं नहीं परन्तु दु:ख है कि इन्हीं प्रान्तों के लोगों में ब्रह्मचर्य के विषय में ऐसे भ्रम–पूर्ण विचार फेले हुए हैं जिनका निराकरण करना ब्रह्मचर्य की महिमा के गीत गाने की अपेक्षा भी अधिक आवश्यक प्रतीत होता है। सर्व साधारण में यह विचार घर कर चुका है और दिनों दिन करता चला जा रहा है कि ब्रह्मचारी को खूब हट्टा–कट्टा पहलवान होना चाहिये। ब्रह्मचारी का शरीर पतला नहीं हो सकता। कई बार तो इसी विचार के प्रभाव के कारण कई भाई अच्छे–भले ब्रह्मचारियों पर भी अपने कृपा कटांक्ष छोड़ने लगते हैं। उनकी सम्मति में कोई पतला आदमी ब्रह्मचारी हो ही नहीं सकता। दुर्भाग्यवश यदि कोई ब्रह्मचारी शारीरिक दृष्टि से पतला दीख पड़ता हो तो उसका अन्य सब गुणों के होते हुए भी ऐसे लोगों से बचना मुश्किल हो जाता है। वह बेचारा काम क्या करेगा–उसे तो ऐसे लोगों के चंगुल से छूटने के लिए सफाई पेश करते–2 ही छुट्टी नहीं मिलती!

ब्रह्मचर्य के से महान् विषय पर बोलने के अधिकार का इस्तेमाल उन्हीं लोगों को करना चाहिये जिन्होंने इस विषय को भलीभांति समझा हुआ हो। ब्रह्मचर्य का नाम लेकर चिल्लाने वालों में से बहुत से ब्रह्मचर्य की महिमा को बढ़ाने के स्थान पर उसे घटाने में सहायक बन रहे हैं क्योंकि, स्मरण रहे, किसी भी कार्य की हानि अन्य उपायों से इतनी नहीं होती जितनी उसके यथार्थ स्वरूप को न समझकर उसके साथ अन्धे प्रेम से होती है।

इसमें सन्देह नहीं कि ब्रह्मचर्य से शारीरिक वृद्धि होती है। इसमें भी सन्देह नहीं कि ब्रह्मचर्य की शक्ति बड़ी है। परन्तु यह बात सरासर झूठ है कि ब्रह्मचारी पतला नहीं हो सकता। हां! ब्रह्मचर्य और दुर्बलता का साथ नहीं, दुर्बलता का, कई मौकों पर अर्थ ही ब्रह्मचर्य का अभाव होता है परन्तु इससे यह परिणाम निकालना कि ब्रह्मचारी पतला नहीं हो सकता सर्वथा भ्रम–मूलक है। ब्रह्मचर्य का अर्थ शक्ति है, क्रिया–शीलता है, तत्परता है, उत्साह है, ओजस्विता है, सहन शीलता है। इसका अर्थ मोटापन नहीं, पहलवानी नहीं, शरीर में मांस या वजन का बढ़ जाना नहीं। वे लोग बड़ी भूल करते हैं जो किसी व्यक्ति को कार्य–शील तथा स्वस्थ देखकर भी केवल उसके पतले होने के कारण अपने दिमाग में तरह–2 की कल्पनाएं करने लगते हैं वे ब्रह्मचर्य का नाम लेते हैं परन्तु उसके रहस्य को नहीं समझते।

मोटे आदमियों की संख्या दुनिया में कम नहीं। बैठे रहने से मुटापे को छोड़कर और क्या

आयगा? परन्तु इससे मोटे आदमी को आदर्श ब्रह्मचारी समझ लेना और शरीर से पतले दिखने वाले व्यक्ति से प्रश्न करने लग जाना ब्रह्मचर्य के तत्व को ही न समझना है। अथर्ववेद के 11वें काण्ड का 5वां सूक्त 'ब्रह्मचर्य' का नाम आता है वहां साथ में 'तप' का नाम भी मौजूद है। 26 मंत्रों के इस सूक्त में 15 बार तप शब्द को दोहराया गया है। 'स आचार्यं तपसा पिपर्ति', 'ब्रह्मचारीधर्मं वसानस्तपसोदतिष्ठत्' 'रक्षति तपसा ब्रह्मचारी' इस प्रकार प्रत्येक मंत्र में तप की मुहरानी जपी गई है। तप से मुटापे का वही सम्बन्ध है जो 3 का 6 से। इसलिए ब्रह्मचर्य से जो लाभ होते हैं उनके विषय में सोचते हुए सदा ध्यान रखना चाहिये कि ब्रह्मचर्य शारीरिक स्वास्थ्य देता है, सहन शक्ति, उत्साह तथा साहस देता है। ब्रह्मचर्य से मानसिक शक्तियों का विकास होता है, आत्मा उन्नति के मार्ग पर चलने लगता है। ब्रह्मचर्य का यही दावा है–दूसरा कुछ नहीं। ❁❁❁

प्रश्नोत्तर

राजा भोज ने कवि कालीदास से दस सर्वश्रेष्ठ सवाल किए।

प्रश्न–1 दुनिया में भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना क्या है?
उत्तर– माँ।
प्रश्न–2 सर्वश्रेष्ठ फूल कौन सा है?
उत्तर– कपास का फूल।
प्रश्न–3 सर्वश्रेष्ठ सुगन्ध कौन सी है?
उत्तर– मिट्टी की।
प्रश्न–4 सर्वश्रेष्ठ मिठास कौन सी है?
उत्तर– वाणी की।
प्रश्न–5 सर्वश्रेष्ठ दूध कौन सा है?
उत्तर– माँ का।
प्रश्न–6 सबसे काला क्या है?
उत्तर– कलंक।
प्रश्न–7 सबसे भारी क्या है?
उत्तर– पाप।
प्रश्न–8 सबसे सस्ता क्या है?
उत्तर– सलाह।
प्रश्न–9 सबसे मँहगा क्या है?
उत्तर– सहयोग।
प्रश्न–10 सबसे कड़वा क्या है?
उत्तर– सत्य।

पाठकों से नम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से निवेदन है जिन्होंने वर्ष 2015 का शुल्क अभी तक जमा नहीं कराया है वे वर्ष 2016 के वार्षिक शुल्क के साथ शीघ्र ही **'सत्य प्रकाशन'** कार्यालय को भेजकर जमा करायें ताकि पत्रिका व विशेषांक सुचारू रूप से आपको प्राप्त होते रहें।

–व्यवस्थापक

होली के अवसर पर व्यंग्यात्मक रचना–

भोजन भट्टों की आत्माभिव्यक्ति

रचयिताः लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र', भोजपुरा– मैनपुरी (उ० प्र०)

हम डाकू नहीं, 'डकारु' हैं, हम योद्धा बड़े जुझारू हैं।
डाकू होना है कठिन कार्य, हम डाकू नहीं डकारू हैं।
मरना–मारना है बुरा काम, हम बजते बाजा मारू हैं।
डाकू होने में भय, अपार, जीवन भर चलती मार–धार।
डाकू होने में क्लेश–कष्ट भोजन या आती है डकार।
डाकू होने में डर लगता, अपराधी–संज्ञा मिलती है।
सम्मान न मिलता सभ्यों में, दुष्टों में होती गिनती है।
डाकू होते अनपढ़े मूर्ख, हम पढ़े लिखे हैं ज्ञानवान।
हम शुद्ध सात्विक भोजन का रखते आये हैं सदा ध्यान।
लड्डू–पेड़ों का ढेर पचा, थोड़ी–सी 'बूटी' धारू हैं।
हम डाकू नहीं, डकारू हैं।
पसुरा लेते हम 'भैंसों'' को, दुहलेते गाय दुधारू हैं।
हम डाकू नहीं डकारू हैं।
हम सर्वश्रेष्ठ, भोजनाचार्य, सेवों की करते जिजमानी।
हम स्वर्ग मोक्ष का द्वार खोल, पुरखों को पिलवाते पानी।
हम देह–धर्म की रक्षा में भक्तों को कर भव–सिन्धुपार।
हम अपनी पेट–तिजोरी भर, खोलते ठगों को मोक्ष–द्वार।
जिन्दा पहुँचाते स्वर्ग धाम, जिनको यह जीवन भारू हैं।
हम डाकू नहीं डकारू हैं।

मुक्तक

–लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र.'

(1)

कह रहा स्वर–दीप मेरा, मैं ऋचाओं से जला हूँ।
भागते तम के पड़ी पीछे, किरण का फासला हूँ।
शब्द–वेधी वाण लेकर युद्ध आया है तो आये–
वाण–वेधी अंगिरा की मैं गिरा लेकर चला हूँ।

(2)

है बहुत ऊँची बड़ी मीनार लेकिन, आदमी मीनार से ज्यादा बड़े हैं।
चल सका है, वह कहाँ हिल–मिल धरा पर, शीश के बल भूमि के ऊपर खड़े हैं।

(सांस्कृतिक अवहेलना से उत्पन्न देशद्रोह)

।। अथ ईशोववाचः—वयं राष्ट्रे जागृयामः 'वेद'—राष्ट्ररक्षा हेतु जागते रहें।।

देशद्रोही नेताओं हेतु मु0 वोट बड़ी, न कि राष्ट्र? आखिर कब तक 'भारत' कटता तथा अपमानित होता रहेगा?

लेखकः—आचार्य आर्यनरेश, वैदिक गवेषक, हिमाचल

अंग्रेजों द्वारा मुस्लिम लीग की स्थापना से मुसलमान लीडरों को भड़काकर पृथक् देश की मांग की और हमारे सैकुलर लीडरों ने तुरन्त गद्दी पाने की चाह में देश को कटवा दिया। इन्साइक्लो पीडिया ऑफ ब्रिटानिका व कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया। मुस्लिम वोट मिलता रहे इसलिए सरकार ने आर्यभारतीय राजाओं द्वारा बनाये गए लालकिला, तेजोमहल व दिल्ली में ही महरोली स्थित कुतुबमीनार से जानी जाने वाली 'लाट' सहित देश की अनेक प्राचीन धरोहरें जो आर्य–हिन्दू राजपूत शासकों ने बनवाई थी मुगलों द्वारा निर्मित बताई जा रही हैं। भारतीय विशिष्ट भवनों को अपने बनाया हुआ घोषित करके वासना व क्रूरता में डूबे मुगल शासक संसार में अपने आप को महान् सिद्ध करना चाहते थे। सच्चाई तो यह है कि मुगलों ने भारत पर हमले कत्लेआम देवालयों को तोड़कर व लूटकर न तो कोई भवन बनाया न किला न मीनार यदि बनाये तो केवल वेश्यावृत्ति करने एवं भारतीय ललनाओं का जीवन बर्बाद करने वाले हरम व मन्दिरों तोड़कर आतंकवाद की प्रेरणा देने वाली मस्जिदें। प्रमाण हेतु आगरे का लालकिला जिसका वास्तविक नाम बादलगढ़ है, में लगे भारत सरकार के एक नीले बोर्ड को देखिए। वहां आज भी लिखा मिलता है कि अकबर के इस तहखाने में बने 'हरम' में पांच हजार नारियां बन्धक बनाकर रखी जाती थीं। यह बोर्ड अभी सुरक्षित है। लगता है कि मु0 वोट लोभी, देशद्रोही नेताओं और उनके सहयोगियों का अभी उधर ध्यान नहीं गया महर्षि दयानन्द कहते हैं कि भारत का नेता की मिट्टी तथा संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए। हम में अर्थात् देश की जनता ने तथाकथित स्वतन्त्रता के पश्चात् भी यही मूल की कि अपने देश के नेता इंग्लैण्ड एवं अरब की धरती वाले रखे। उसका यह परिणाम निकला कि उन्होंने सारा आर्यों का गरिमाभंग इतिहास समाप्त करवा दिया। और मुगलों के क्रूरतापूर्ण इतिहास पर पर्दा डालकर यह कहा कि (हजारों हिन्दुओं का हत्यारा) अकबर महान् था तथा लाखों का कातिल नीच औरंगजेब जिसने मथुरा में कृष्णजनक मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाई थी वह ईश्वर का महान बन्दा था व राम मन्दिर सहित अनेक मन्दिरों का भंजक, अरबों रूपयों का लुटेरा, लाखों का कातिल अनगिनित आर्यखालसा हिन्दू महिलाओं का दूषक जिसने आर्य हिन्दू जनों की गर्दनें काटकर मीनारें बनाई थीं वह भारतीय संस्कृति को बढ़ाने वाला था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु बच्चों के पाठयक्रम का पूरा इतिहास बदल दिया गया व मुगलों को अपने कुकर्मों से अपमानित होने से बचाने हेतु तथा वोट पाने हेतु बंगाल सहित लगभग सभी प्रान्तों के शिक्षा विभागों को सूचना दी कि किसी भी कक्षा की पुस्तक में मुगलों के हमलों, लूटों, बालात्कारों, मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवाने अथवा बलात् मसलमान बनाने की कोई

चर्चा न होनी चाहिए। इस आदेश का कठोरता से पालन किया जाए। जिस देश की प्रधानमंत्री, इन्दिरा 'बाबर' की कबर की पूजा करे उसकी कांग्रेस सरकार क्यों न मुगलों का पक्ष धरे? भारत का सच्चा इतिहास जानने हेतु पं0 भगवतदत्त व पी. एन. ओक लिखित पुस्तकें पढ़ें।

सच्चा इतिहास यह है कि लालकिला जिसका प्राचीन नाम लालकोट था वह पृथ्वीराज का महल था। यह शाहजहाँ ने बिलकुल नहीं बनवाया अपितु उससे 400 वर्ष पहले भी था व इसे महाराजा अनंगपाल जी ने बनवाया था। भारतीयों द्वारा बनाये गए भवनों की कुछ विशेष निशानियां हैं जैसे मूर्तियां, अष्टकोणीय-रचना, कमल के फूल, त्रिशूल व हाथियों के चित्र। यह सभी लालकिला, तेजोमहल व महरोली-लाट (कुतुबमीनार) आदि में मिलते हैं। यदि लालकिला शाहजहां ने बनवाया। होता तो उसका यमुना तट 'राजघाट' न कहलाकर 'बादशाह घाट' आदि कहलाता। महरोली-लाट (कुतुबक्षेत्र) में महाराज विक्रमादित्य का वैदिक ज्योतिषी श्री आर्यमिहिर अपने गणितज्ञों सहित वास करता था। यह उनकी नक्षत्र विद्याध्ययन हेतु वेध-स्तम्भ व बेधशाला थी। यह विक्रमादित्य वही थे जिसका अरब पर भी राज था और उसका विजयशिला लेख मक्का के मन्दिरों में लगा था। तेजोमहल जिसका वास्तविक नाम 'तेजोजी' था इसको महाराजा परमदेव ने 115 में बनवाया था। मुल्ला अब्दुल हमीद लाहोरी अपनी पुस्तक 'बादशाहनामां' के प्रथम भाग पृष्ठ 403 पर लिखता है कि यह राजामानसिंह का था और एक देवालय था इसे राजा मानसिंह के पोते राजा जयसिंह से लिया गया। दरगाह निजामुद्दीन, हुमायूं का मकबरा, सफदरजंग-मकबरा, शेर मण्डल जो पुराने किले में है, किला तुगलकाबाद (दिल्ली), फिरोजशाह कोटला, लोधी मकबरा, रोशनआरा मकबरा आदि भवन सभी हिन्दू राजा द्वारा बनवाये गये थे। अय्याश कातिल नशेबाज मुगलों ने केवल कुछ पत्थरों को बदलकर ताजमहल की तरह अरबी भाषा डाल दी, या तोड़-फोड़ करके असलियत को छिपाने का प्रयास किया। मुस्लिम वोट के मोह में एवं गोरों की हिन्दुओं को दबाने की चाल से महान् हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के अजमेर किले को लुटेरे गोरी के साथी की दरगाह बना दी। देश के बच्चों को पथ भ्रष्ट करने हेतु पुरानी नेहरू गांधी नीति के कारण आर्यावर्त भारत के प्राचीन गरिमामय इतिहास को न पढ़ाकर उसके स्थान पर गोरों व मुगलों के गीत गाये जा रहे हैं एवं हिन्दुओं के कत्लेआम पर नाच-नाच कर गाने वाले अमीर खुसरो की प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं। पढ़े बदायुनी लिखित खिलजी का इतिहास प्रमाण है। इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं कि भारत में बने हुए सभी किले, महल व मीनारें आर्य हिन्दुओं द्वारा ही बनाए गए थे जिन्हें मुगलकाल में हमलावरों ने तोड़फोड़ कर मकबरों व मस्जिदों का रूप दे दिया। इन प्राचीन भवनों को मुसलमानी सिद्ध करने हेतु उन पर बने कमल, शंख, हाथी व मूर्तियों को तोड़ दिया गया। परन्तु फिर भी कहीं-कहीं छूट जाने से वे अपनी असलियत तथा मुगलों एवं उनके सहयोगियों की चोरी को प्रकट कर रहे हैं। 1952 में पुरातत्व विभाग के एक कर्मचारी श्री ई0 आर0 साठे ने ताजमहल की एक दीवार में पड़ी दरार को ठीक करने का कार्य प्रारम्भ किया। जब मिस्त्रियों द्वारा दीवार में ईंटें लगाई जा रही थी तो वहां से देवियों की मूर्तियां निकलीं। यह बात विदेशी कांग्रेसी नेहरू सरकार तक पहुंची। उस समय के मुगल प्रेमी शिक्षामंत्री मौलाना आजाद और प्रधानमंत्री नेहरू के आदेश से दोनों दीवारें बन्द कर दी गईं व मूतियां भी सत्य को

छिपाने हेतु लाल किले की हिन्दू कलाकृतियां भी पृथक बंद है। नेहरू जी बड़ी जिन्दादिली से कहते थे कि मैं रहन-सहन व खानपान से मुस्लिम हूँ। देखो आत्मकथा नेहरू मुस्लिम नाम का एकमात्र महान् देशभक्त नेता व जज श्री मियां एम0 के0 छागला कहते थे कि सरकार आरक्षण से देश को न बांटें, अलीगढ़ विश्वविद्यालय को मात्र मुस्लिम विश्वविद्यालय कहकर लोगों में दरार न डाले एवं देश की एकता हेतु उर्दू को देवनागरी लिपि में ही लिखवायें। जैसे कि चीन व टर्की आदि देशों में चलता है। सत्य कहने वाले उस 'मूसल' ईमान को मक्खन से बाल की तरह कांग्रेस ने दूर फेंक दिया। सत्य यह है कि देश सच्चे इतिहास, देशभक्त लोगों के चरित्र, पक्षपातरहित नीति एक समान लिपि व भाषा, एक समान कानून संहिता से संगठित तथा उन्नत' होता है एवं वर्तमान की नीतियों से खण्डित व आतंकित हो रहा है। कभी कश्मीर आर्य हिन्दू बाहुल्य देश था यहां पर बोले जाने वाली कश्मीर भाषा जिसमें बहुत से शब्द संस्कृत के हैं। वह देवनागरी लिपि में लिखी जाती थी। तब यह धरती का स्वर्ग कहलाता था। संस्कृत संस्कृति शास्त्र तथा गोरक्षा से यह पूज्य-धरा से महिमा मण्डित था। यहां का राजा भी राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर द्वारा आमंत्रित था (देखें महाभारत), कश्मीर वस्तुतः कश्यप ऋषि द्वारा संस्थापित अत्यन्त धार्मिक व भाईचारे की पुण्यभूमि थी, पहले उसे 1392 से 1420 तक सिकंदर सुहा ने लूटा व कत्ल किया फिर नेहरू लाल के 370 ने इसे गोहत्यारों का बूचड़खाना बना दिया। आधा कश्मीर पहले ही इस नेता की भूल व माउंटबेटन नेहरू प्रेम से चला गया। शेष बचे से भी लगभग पांच लाख हिन्दुओं को सम्पदा व सुन्दर कन्याओं को छीनकर पुरानी मुगली तलवार नीति से भगा दिया गया। लगभग सभी संस्कृत व हिन्दी के नाम बदल दिए गए। आज वहां लगभग 90 से 95 प्रतिशत गौभक्षकों का वास है जो कुरान के अनुसार हिन्दुओं को काफिर समझते हैं एवं उन्हें भी मुसलमान बनाकर व काटकर या भगाकर अपना राज चाहते हैं देखें कुरान सूरा 8 आयत 12, सूरा 9 आयत 5 पाकिस्तान कहता है कि कश्मीर में दंगे होते हैं, वे आजादी चाहते हैं। हमें कहते हैं कि बलोचिस्तानी पाक से अलग होने की आजादी चाहता है। क्या वह उसे अलग कर देगा? यही स्थिति चीन के मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र की है। पाक लगभग प्रतिदिन सीमा पर गोलाबारी है कभी कार्गिल घुसपैठ है। हजारों आर्यवीर सैनिक मार दिए जाते हैं। बार-बार कर्फ्यू लगता है, सरकारी सम्पति जलाई जाती है क्योंकि उनका कुछ जाता नहीं, केवल एक ही मांग है कि कश्मीर से मिलिट्री निकालो, इसे इस्लामिक हेतु मुसलमानों के हवाले करो। हुर्रियत लीडर गिलानी की खुली मांग है कि 'हमारा संविधान 'कुरान' है। अमरनाथ यात्रा या पर्वतीय यात्रा बन्द करो। हिन्दुओं को यहां जमीन मत दो। कैम्प लगाएं तो दस हजार रुपये लो। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है क्योंकि देश का नेता वोट-गद्दी का भूखा है, अन्यायकारी गोहत्यारों आतंकवादियों के समक्ष झुकता चला जा रहा है। अपनी संस्कृति मिटा रहा है, उनके आतंकराज्य को प्रेरणा दे रहा है। पार्टी व वोट नहीं देश बड़ा है यह बात नेताओं और जनता को शीघ्र समझनी होगी व नेताओं को तुष्टिकरा से रोकना होगा। अन्यथा पाकिस्तान की तरह कश्मीर भी चला जाएगा कश्मीरियों को मुफ्त जैसा राशन मिलने पर भी वे देशभक्त नहीं बनें क्योंकि सैकुलर अर्धमुस्लिम नेहरू गांधी सरकार ने उन्हें भारतीय संस्कृति का पाठ न पढ़ाकर लुटेरे मुगलों के महान होने का पाठ पढ़ाया। ❁❁❁

बलि प्रथा ! एक घिनौना कृत्य

लेखकः–रामेन्द्रकुमार आर्य, मदनियाँ महोली सीतापुर (उ० प्र०) 09473797593

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ''यज्ञौ वै श्रेष्ठतम् कर्म'' जो व्यक्ति प्रतिदिन यज्ञ नहीं करता वह पाप का अन्न खाता है यज्ञ को करने वाला व्यक्ति स्वर्ग को अर्थात् सुख विशेष को प्राप्तकर्त्ता है बिना बदले की भावना से प्राणी मात्र के कल्याण के लिए जो कार्य किये जाते हैं उन्हें भी यज्ञ कहते हैं हमारे वैदिक शास्त्र में पांच यज्ञ करने का विधान है।

ब्रह्मयज्ञ– अर्थात् ईश्वर की प्रातः सायं संध्या करना।

देवयज्ञ– सुगन्धित, पुष्टिकारक, रोगनाशक पदार्थों को अग्नि में डालकर जड़ और चेतन देवताओं की समृद्धि के लिए।

अतिथि यज्ञ– हमारे घरों में जो मेहमान, संन्यासी, विद्वान्, निराश्रित आयें उनकी जाँच परख करके जलपान, वस्त्र इत्यादि देकर उनसे सत्योपदेश सुनना और सत्योपदेश देना।

पितृयज्ञ– जीवित माता–पिता, दादी–दादा, नाना–नानी अर्थात् वयोवृद्ध लोगों को समय–समय पर भोजन वस्त्र और उनकी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही पितृयज्ञ कहलाता है। मरने के बाद पितरों के नाम पर गया, प्रयाग, कुरुक्षेत्र तथा अमुक–अमुक स्थानों पर जाकर उनके नाम से किसी वर्ग विशेष को दान देना पाप व अधर्म है जिसे समाज के चतुर लोगों ने प्रचारित करके जनता को सत्यमार्ग से विमुख किया।

बलिवैश्व देवयज्ञ– बलि अर्थात् हिस्सा हमारे जीवन के वातावरण में पशु पक्षियों का भी विशेष स्थान है। अतः अपने भोजन में से थोड़ा हिस्सा गाय, कुत्ता, चिड़ियों को खिलाना, उनका लालन–पालन करना थोड़ा अग्नि में मिष्ठ भोजन डाल देना बलिवैश्व यज्ञ कहलाता है। समय–समय पर साहित्य में चतुर लोगों ने अर्थ का अनर्थ करके बलि का अर्थ मूक पशुओं को तथाकथित देव स्थानों पाषाण मूर्तियों के सामने काट–काटकर मार देना ही इसका अर्थ समझते हैं। देखिये नेतराम आर्य के शब्दों में–

खगन मृगन की को कहै, नर बलि होय निसंक।
पूजै नर पाषाण जो मस्तक चढ़ै कलंक।।

अरे! भोले हिन्दुओं सनातनी भाइयों तंत्र, जंत्र, फलित ज्योतिष, पत्रा और पंचाग के इर्द गिर्द चलने वालो जरा विवेक से विचार करो ये मूक प्राणी बकरा, भेड़, भैसें, गायें, बछड़े, मुर्गा आदि–आदि पक्षियों के छोटे–छोटे बच्चों की बलि चढ़ाने में तुमको जरा भी हिचक और शर्म न आयी धिक्कार है। तुम्हारे ऐसे धर्म ग्रन्थों को जिनमें अपनी रसना के स्वाद के लिए ऐसे कुकृत्यों को बढ़ावा दिया। यह रोग हमारे हिन्दू समाज में मध्य काल से विदेशी शासकों के दौरान खूब फला–फूला, राम–कृष्ण की संतति

कहलाने वाली हिन्दू जाति जागो अन्यथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियाँ तुझे माफ नहीं करेंगी। ऐसी पूजा पद्धति की पुस्तकें धर्म के विषय में कही जाने वाली धार्मिक पुस्तकें, टी0 वी0, समाचार पत्रों के द्वारा जहाँ ऐसे तंत्र मंत्र जंत्र के द्वारा मनोकामना पूर्ण करते हुए बलि देने की बात आ रही हो उसका पुरजोर विरोध करो। अपना तीसरा नेत्र खोलने के लिए "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ो। अन्यथा!

अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे,
न तुम बचोगे न साथी तुम्हारे।।
रामायण, महाभारत पढ़ो देखो ग्रन्थ हजार।
बिन सत्यार्थ प्रकाश के जीवन है बेकार।।
कोटि–2 जनता की आश! पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश।
सत्य धर्म की यदि हो आश! पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश।।
कुर्आन, पुराण, बाइबिल और अन्ध विश्वास।
इन सबको सुधारता है सत्यार्थ प्रकाश।
सौ मर्जों का एक इलाज पढ़ो मित्र सत्यार्थ प्रकाश।।

❁❁❁

महापुरुषों की जयन्ती

महर्षि दयानन्द सरस्वती	4 मार्च
याज्ञवल्क्य	5 मार्च
रामकृष्ण परमहंस	10 मार्च
राममनोहर लोहिया	22 मार्च
हेमु कालानी	23 मार्च
चैतन्य महाप्रभु	23 मार्च
छत्रपति शिवाजी	26 मार्च

3 मार्च	राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
7 मार्च	महर्षि दयानन्द बोधोत्सव
8 मार्च	विश्व महिला दिवस
13 मार्च	राष्ट्रीय एकता दिवस
15 मार्च	विश्व ग्राहक दिवस
21 मार्च	विश्व अपंग दिवस
23 मार्च	होलिका दहन
24 मार्च	धूलेंडी

महापुरुषों की पुण्यतिथि

सरोजिनी नायडू	2 मार्च
बाबा पृथ्वीसिंह आजाद	5 मार्च
गोविन्दबल्लभ पंत	7 मार्च
सावित्रीबाई फुले	10 मार्च
पं0 गुरुदत्त विद्यार्थी	19 मार्च
शहीद सरदार भगतसिंह	23 मार्च
शहीद राजगुरु, सुखदेव	23 मार्च
गणेशशंकर विद्यार्थी	25 मार्च
पं0 लेखराम	30 मार्च
भाई काका	31 मार्च

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

श्रीमद् भगवद् गीता (एक सरल चिन्तन)	प्रेस में
चार मित्रों की बातें	प्रेस में
गृहस्थ जीवन रहस्य	प्रेस में
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	प्रेस में

❋ संस्कृत की महानता ❋

+ राष्ट्रीय ध्येय संस्कृत भाषा में +

संकलनकर्त्ता– रामेन्द्रकुमार आर्य, मदनियां, महोली, सीतापुर (उ० प्र०) 09473797593

क्रमांक	नाम संस्था	संस्कृत वाक्य
1.	आर्यसमाज	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
2.	आर्य वीरदल	अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तु
3.	भारत सरकार	सत्यमेव जयते
4.	लोक सभा	धर्मचक्र प्रवर्त्तनाय
5.	उच्चतम न्यायालय	यतो धर्म स्ततो जयः
6.	गुरुकुल कांगड़ी वि. वि. हरिद्वार	ब्रह्मचर्येण तपसा देवा
7.	दिल्ली वि. वि.	निष्ठा धृति सत्यं
8.	पन्तनगर कृषि वि. विद्यालय	ग्रामाभ्युदयः देशाभ्युदयः
9.	रुहेलखण्ड वि. वि. बरेली	चरैवेति चरैवेति
10.	चौ० चरणसिंह वि. वि. मेरठ	यस्य सत्यस्य परम निधानम्
11.	आकाश वाणी	बहुजन हिताय
12.	दूरदर्शन	सत्यं शिवं सुन्दरम्
13.	भारतीय प्रशासनिक सेवा	योग कर्म सुकौशलम्
14.	सेना	स्वधर्मे निधनं श्रेय
15.	नौ सेना	शन्नो वरुण
16.	थल सेना	सेवा अस्माकं धर्म
17.	वायु सेना	नमः स्पृशं दीप्तम्
18.	जल सेना	शन्नो वरुण
19.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन	तत्वं पूषन्न पावणु
20.	डाकतार विभाग	अहनिशं सेवा महे
21.	विद्याज्ञान	विद्या परम ऐश्वर्यम्
22.	नवोदय विद्यालय	प्रज्ञानं ब्रह्म
23.	आयकर विभाग	कोष मूलो दण्डाः
24.	भारतीय जीवन बीमा निगम	योगक्षेम वहाम्यहम्
25.	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	मुद्राये लोक मंगलम्

26.	जीवन बीमा निगम सहारा	चिरंजीवी भव
27.	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	प्रत्न कीर्तिमपावृणु
28.	रक्षा मंत्रालय	दुष्कृताम्
29.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशि. परिषद(NCERT)	विद्यया मृतमश्नुते
30.	राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण परिषद (NCTE)	गुरुतमोधाम्
31.	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान	विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्
32.	भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान	सत्वात संजायते ज्ञानम्
33.	श्रम मंत्रालय	श्रमेव जयते
34.	राज्य शिक्षा संस्थान प्रयाग उ0 प्र0	तस्मात् उतिष्ठित कौन्तेय
35.	राजपूताना रायफल	वीर भोग्या वसुन्धरा
36.	पर्यटन विभाग	अतिथि देवो भव
37.	जिला सहकारी बैंक उ0 प्र0	संघे शक्ति सर्वदा
38.	गढ़वाल रेजीमेंट	युद्धायकृत निश्चयः
39.	विकलांग संगठन	पंगुम् लंघयते गिरिम्
40.	कर्मचारी संगठनों में	संघे शक्ति कलयुगे
41.	शिक्षण संस्थाओं में	तमस्ते मा ज्योर्तिगमय
42.	शिक्षण संस्थाओं में	नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
43.	गन्ना शोध परिषद	इक्षु शर्करा

सुनो हम क्या करेंगे ?

बड़ों को सदा सिर झुकाया करेंगे, न ईश्वर को जी से भुलाया करेंगे।
बना देगी बद हमें संगत बुरों की, भलों की ही संगत में जाया करेंगे।
बुरे बालकों में कभी हम न बैठें, उन्हें पास अपने न लाया करेंगे।
बुरी बात हरगिज सुनें मत किसी की, किसी को बुरी न सुनाया करेंगे।
करें दिल्लगी न किसी से कभी भी, भलाई में दिल को लगाया करेंगे।
फिरें न बिना काम गलियों हरगिज, अकेले न मेले में जाया करेंगे।
चमक औरे दमक से न सम्बन्ध रखें, चलन सादगी का दिखाया करेंगे।
जगत् के पिता से डरें हम हमेशा, कभी न किसी को सताया करेंगे।

❁❁❁

फार्म–4

नियम 8 देखिये

1.	प्रकाशन का स्थान	मथुरा
2.	प्रकाशन की अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम (क्या भारत का नागरिक है) (विदेशी है तो मूल देश) पता	रमेश प्रिंटिंग प्रेस, पंचवटी मथुरा हाँ नहीं रमेश प्रिंटिंग प्रेस, पंचवटी मथुरा
4.	प्रकाशक का नाम (क्या भारत का नागरिक है) (विदेशी है तो मूल देश) पता	आचार्य स्वदेश हाँ नहीं सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा
5.	सम्पादक का नाम (क्या भारत का नागरिक है) (विदेशी है तो मूल देश) पता	आचार्य स्वदेश हाँ नहीं सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	आचार्य स्वदेश, वृन्दावन मार्ग, मथुरा

मैं आचार्य स्वदेश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

मथुरा
दिनांक 14 मार्च 2016

आचार्य स्वदेश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

माननीय श्री सुरेशचन्द्र आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के उपप्रधान श्री मान् सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान बनाया गया है। ज्ञातव्य है श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी महाराज के निधन के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान पद रिक्त हुआ था। माननीय सुरेशचन्द्र आर्य जैसे सच्चे आर्य के इस पद पर सुशोभित होने के बाद निश्चित रूप से आर्यसमाज को नया सम्बल मिलेगा। श्री विरजानन्द ट्रस्ट मथुरा की ओर माननीय प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी को हार्दिक बधाई।

सामाजिक स्तर पर जो हमारे शास्त्रों ने समाज को उन्नत बनाने के व्यक्ति के निर्माण की रुपरेखा रखी। ब्रह्मचर्य जैसे पवित्र जीवन को स्थापित किया गया जिससे समाज सदाचारी हो राष्ट्र उन्नत हो। आज के तथाकथित नेताओं ने उस ब्रह्मचर्य आश्रम की धज्जियाँ उड़ा दी। खुलेमन और वैयक्तिक स्वतंत्रता के नाम पर साहित्य, चलचित्रों, विद्यालयों में, समाचार पत्रों में सर्वत्र ऐसी दुर्दशा की कि हमारे पवित्र विद्यामन्दिर भोगवासना के अड्डे बन गये। वहाँ के छात्र मात्र कामी नरपशु बनकर रह गये। अपनी दुर्निवार्य भोगवासना की तृप्ति के लिए वे हर अनैतिक कार्य करने को सदैव तत्पर रहते हैं। हत्या, लूटपाट, गैंगरेप आदि की घटनायें इसी का दुष्परिणाम है। यदि कोई भला व्यक्ति यदि बेटियों को सदाचार से रहने की शिक्षा देता है तो तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग उसके पीछे हाथ धोकर पड़ जाता है। उसे संकीर्ण, असहिष्णुता मानवीय मूल्यों का घातक पता नहीं कितने विशेषणों से अलंकृत कर दिया जाता है। इसी तथाकथित प्रगतिवादी विचारधारा के लोगों ने सारी सामाजिक मर्यादाओं को ध्वस्त करने का वीणा उठा रखा है। मानव की प्रवृत्ति स्वाभाविक पतयालु होती है नई पीढ़ी इनके चंगुल में पूरी तरह फंस चुकी है। और अपने को बर्बादी की आग में झोंक चुकी है। इसी का लाभ वामपंथी दल उठा रहे हैं। राष्ट्रविरोधी विचारधाराओं के लिए भारतीय संस्कृति से विहीन वातावरण अनुकूल हो रहा है। राहुल गाँधी जैसे लोग जिन्हें भारतीय संस्कृति और भारतीय परम्पराओं का प्राथमिक ज्ञान भी नहीं है ऐसी राष्ट्रविरोधी शक्तियों का भरपूर सहयोग कर रहे हैं।

क्या आप सब देखते नहीं? जब देश की रक्षा के लिए हमारे जवान अपनी जान देते हैं और उनके शव आते हैं तब राहुल गाँधी जैसे लोगों के दिल में न जाने दर्द क्यों नहीं होता है। जहाँ कोई राष्ट्र विरोधी कार्य हुआ वहाँ जाकर राष्ट्र विरोधी शक्तियों को समर्थन देने में देर नहीं लगाते हैं। घोर राष्ट्रविरोधी कन्हैया जैसों की वकालत करने तो शीघ्र पहुँचते हैं पर देश के लिए जान देने वाले वीरों का नाम नहीं लेते हैं ऐसी ही दशा वामपन्थी दलों की भी है। दिनकर ने ठीक ही लिखा है कि–

जब स्वार्थ मनुज की आँखों पर,
माड़ी बनकर छा जाता है।
तब वो मानव से बड़े–बड़े,
दुश्चिन्त्य कृत्य करवाता है।

इन स्वार्थान्ध लोगों को सत्ता के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता है। इन स्वार्थान्ध भेड़ियों से भारत माता को बचाने के लिए मेरा सभी देशवासियों से निवेदन है कि आपको जरा भी गौ, गंगा, गीता, राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप व वैदिक संस्कृति से प्रेम है और आप यदि यह नहीं चाहते है कि हमारी बहिन बेटी की इज्जत लुटे उनके साथ बलात्कार हो, तो अब आप संकल्प लेलें। कि तुष्टीकरण की नीति के सहारे देश के टुकड़े करने वाले लोगों साथ हम कभी नहीं देगें।

अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक, जातीय, क्षेत्रीय मानसिकता को एक किनारे रखकर एक जुट खड़े हो जायें और आज के युग में सबसे बड़ा हथियार है मताधिकार का प्रयोग। चुनाव के समय ऐसी घृणित मानसिकता वाले लोगों को चिह्नित कर दो और देश द्रोह का बदला उन्हें सत्ता से वेदखल करके दो। यदि आपने अपने मताधिकार का प्रयोग राष्ट्रहित रख करके किया तो निश्चित ही राष्ट्रविरोधी शक्तियों का संहार हो जायेगा। हर राष्ट्रवादी व्यक्ति को प्राण–पण से जन मानस को इस तथ्य से अवगत करा देना होगा अन्यथा राष्ट्रिय अखण्डता संकट में है यही समय राष्ट्रविरोधियों को कुचलने का है। इनके छद्म रूप को पहचानों और जनता को वास्तविकता बताओ। जन मानस को जागृत करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। ❁❁❁

'तपोभूमि' मार्च 2016 R.N.I. No. 2321/57 रजि. सं. MTR नं. 04/2016-18

उद्घाटन अवसर पर
सभा को सम्बोधित
करते हुए
श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र जी आर्य

श्री बंशीधर जी आर्य सत्यार्थ प्रकाश
प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए
श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र जी आर्य
एवं उनके परिजन साथ में पंकज जी
आर्य अध्यक्ष आर्यवीर दल
उत्तर प्रदेश

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2016 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य

सत्य प्रकाशन

डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबाइल- 9759804182

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए रमेश प्रिन्टिग प्रेस, पंचवटी, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित

Yogendra # 9927136600